(मासिक)
ज्ञानामृत
वर्ष 52, अंक 3, सितम्बर, 2016
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

1.नई दिल्ली- भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता प्रणव मुखर्जी को राखी बांधते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी तथा ब्र.कु. नीलू बहन। साथ में हैं ब्र.कु.आशा बहन। 2.काठमाण्डू- नेपाल की राष्ट्रपति महामहिम बहन बिद्या देवी भण्डारी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. राज बहन।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

1.काठमांडू- नेपाल के प्रधानमंत्री भ्राता पुष्प कमल दाहाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राज बहन। **2.कोलकाता (म्यूजियम)-** पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता केसरीनाथ त्रिपाठी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. कानन बहन। **3.इन्दौर-** लोकसभा अध्यक्ष बहन सुमित्रा महाजन को राखी बांधते हुए ब्र.कु. अनीता बहन। साथ में ब्र.कु. शकुंतला बहन। **4.त्रिवेन्द्रम-** स्वतंत्रता दिवस महोत्सव के पश्चात् समूह चित्र में केरल के राज्यपाल महामहिम भ्राता पी. सतशिवम, ब्र.कु. मिन्नी बहन तथा ब्र.कु. शिन्नी बहन। **5.रांची-** झारखंड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मू को राखी बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन। **6.चेन्नई-** तमिलनाडू के राज्यपाल महामहिम डॉ.के. रोसैय्या को राखी बांधते हुए ब्र.कु. कलावती बहन। **7.शिलांग-** मेघालय के राज्यपाल महामहिम भ्राता वी. शण्मुगनाथन को राखी बांधते हुए ब्र.कु.नीलम बहन। **8.जोधपुर (सरदारपुरा)-** जोधपुर के महाराजा गजसिह जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. शील बहन। **9.चंडीगढ़-** हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता कप्तान सिंह सोलंकी को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. उत्तरा बहन। **10.पटना-** बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता नीतीश कुमार को राखी बांधते हुए ब्र.कु.संगीता बहन। **11.लखनऊ (गोमती नगर)-** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता अखिलेश यादव को राखी बांधते हुए ब्र.कु. राधा बहन। **12.नवसारी-** कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता सी.जे.डांगरिया को राखी बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन।

संजय की कलम से

दैवी संस्कृति और भौतिक संस्कृति

दो संस्कृतियाँ हैं, दैवी और भौतिक। दैवी संस्कृति में यद्यपि भौतिक मूल्यों को भी महत्व दिया जाता है लेकिन आध्यात्मिक मूल्य उसकी आधारशिला हैं। भौतिक संस्कृति, भौतिक मूल्यों पर पूर्णरूपेण अवलम्बित है। उसमें आध्यात्मिक मूल्यों के लिए कोई स्थान नहीं। वहाँ 'स्व' की नहीं, 'पर' की खोज है। उसे अपने विषय में जानने की कोई चिंता नहीं है कि हम कौन हैं, कहाँ से इस सृष्टि में आए हैं और फिर वापस कहाँ जायेंगे? भौतिक संस्कृति में पला व्यक्ति प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए पागल है। फ़लस्वरूप, छोटे से अणु से लेकर विशाल सागर, अन्तरिक्ष, ग्रह, नक्षत्रों के रहस्यों से वह परिचित हो गया है लेकिन 'स्वयं' से सर्वथा अपरिचित है। प्रकृति की शक्ति को उसने जान लिया है लेकिन अपनी शक्ति का उसे कोई ज्ञान नहीं। इस तरह स्व को खोकर उसने सब कुछ प्राप्त कर लिया है लेकिन उस प्राप्ति का भला क्या अर्थ हो सकता है! यह तो मुर्दे को बहुमूल्य वस्त्रों से सजाने की तरह है। अध्यात्म-शून्य व्यक्ति की आत्म-ज्योति क्षीण हो जाती है। उसकी आत्मा विकारों की तीव्र ज्वाला में जलकर काली हो जाती है। वह अपने आप को विकारों की भीषण ज्वाला में जलाता रहता है तथा दूसरी आत्माओं को भी काम, क्रोध की अग्नि में झुलसाता है। वह सच्चे अर्थों में 'भस्मासुर' है।

दैवी संस्कृति में पला मनुष्य भौतिक साधनों का प्रबन्ध करेगा लेकिन उसके लिये चरम महत्व आध्यात्मिक मूल्यों का ही होगा। वह जड़ को जल देता है अत: शाखायें स्वत: हरी-भरी रहती हैं। ऐसे व्यक्ति अथवा समाज को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों सुखों की प्राप्ति हो जाती है। लेकिन भौतिक मूल्यों को ही सब कुछ मानने वाला समाज दोनों सुखों को गँवा देता है। सतयुग, त्रेता की अपार भौतिक सम्पदा आज कहाँ है?

दैवी संस्कृति की पुनर्स्थापना कराने के लिये पतित-पावन परमपिता परमात्मा शिव पुन: गुप्त रूप में अवतरित हो चुके हैं। वे ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा तमोप्रधान आत्माओं को सतोप्रधान बनाकर उन्हें सुख-शान्ति से परिपूर्ण कर रहे हैं। ऐसी पावन आत्मायें न तो दूसरों पर काम-कटारी चलाती हैं और न उन्हें क्रोधाग्नि में जलाती हैं। वे स्वयं अतीन्द्रिय आनन्द का प्याला छक कर पीती हैं और दूसरों को सुख-शान्ति प्रदान करना अपने जीवन का चरम लक्ष्य समझती हैं। ❖

❀ अमृत सूची ❀

- देने वाला है देवता (सम्पादकीय) 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ...6
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 8
- तू तनाव छोड़ दे (कविता).......8
- फैशन की बढ़ती महिमा 9
- जब ज्ञानामृत ने किया कमाल ..10
- अपने को कर्त्ता नहीं............11
- आदतों की गुलामी.............12
- प्रतिशोध नहीं, आत्मशोध......13
- राजयोग एक गहन तपस्या......15
- विश्वास की शक्ति 16
- दिनचर्या होगी सर्वश्रेष्ठ 17
- हृदयाघात बना वरदान 18
- शिक्षा प्रभाग सूचना 19
- एक अद्‌भुत उड़ान 20
- श्रेष्ठ संस्कारों का महत्व.......22
- संविधान.......................23
- ज़िन्दगी की दौड़-भाग.........26
- भट्ठी के बीच पूंगरों की तरह...27
- क्षमा भाव और साक्षी भाव.....28
- पूजा के रहस्य 29
- एक के चौबीस.................31
- सचित्र सेवा समाचार...........32
- पवित्रता की भावना 34

सदस्यता शुल्क

भारत	**वार्षिक**	**आजीवन**
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

देने वाला है देवता

इस संसार में दो प्रकार के लोग हैं, एक हैं 'देव' और दूसरे हैं 'लेव'। 'देव' वे हैं जिन्होंने समाज को दिया है और इन 'देव' लोगों ने यदि किसी से लिया भी है तो उसके प्रति कृतज्ञ रहे हैं, उनका ऋण माना है और उसे चुक्ता करने के लिए कई गुणा श्रेष्ठ कर्म किए हैं। 'लेव' वे होते हैं जो मात्र पेट भरने के लिए पैदा होते हैं और पेट भरते-भरते संसार से चले जाते हैं।

लें कम, दें ज्यादा

भारतीय संस्कृति आदिकाल से 'देव' संस्कृति है। इस संस्कृति का उद्घोष है कि हम लें कम और दें ज्यादा। देने की भावना को लेकर ही द्वापरयुग से यज्ञ, हवन आदि की प्रथा प्रारम्भ हुई। यज्ञ क्यों किया जाता है? इसलिए कि ऋषि-मुनियों की यह भावना रही कि हमने प्रकृति से प्राणवायु ली है जिसने हमें जिन्दा रखा है। हमने अच्छी वायु लेकर गन्दी वायु वातावरण को दी है। इसका ऋण कैसे उतरे? इसके लिए सोचा गया कि सारे संसार की वायु को सुगन्धित बनाने के लिए घी को अग्नि में होम कर दिया जाए। घी की खुशबू वाली हवा वातावरण में घुलेगी तो प्राणियों के शरीर पुष्ट होंगे, रोगों का निवारण होगा और हम प्रकृति के ऋण से उऋण होंगे। राजयोग भी मानसिक यज्ञ के समान है जिस द्वारा हम मन के शुभ विचारों के प्रकम्पन सारे विश्व में फैलाते हैं। हवा द्वारा खुशबू फैलाने से भी तीव्र गति से ये शुभ संकल्प फैल कर जड़-चेतन का शुद्धिकरण करते हैं।

देकर हो जाते हैं उजले

सारी सृष्टि का संचालन देने की भावना से होता है। बादलों को देखिए, समुद्र से पानी लेकर जमीन पर बरसते हैं। जमीन पानी लेकर अन्न, फल, सब्जी, घास उगाती है। इन्हीं के आधार से हम जिन्दा हैं। बादलों का दिया हुआ पानी नदियों में भरा, नदियों ने उसे बहने दिया और वह समुद्र में चला गया। इस प्रकार, समुद्र से बादलों में, बादलों से जमीन पर, जमीन से नदियों में, नदियों से समुद्र में... यह चक्र सतत चलता रहता है। इसी सतत प्रवाह पर दुनिया टिकी हुई है। आश्चर्य की बात देखिए, जब बादल समुद्र से जल लेकर भर जाता है तो काला हो जाता है किन्तु जब जल का दान देकर खाली हो जाता है तो सफेद हो जाता है। लेने और देने की भावना का यह अन्तर, हमें देकर उजला रहने की प्रेरणा देता है।

शरीर संचालन का आधार – देना

रामचरित मानस में लिखा है –

संत, बिटप, सरिता, गिरि, धरनी,
परहित हेतु सबन्ह कै करनी ।

भावार्थ है कि संत, वृक्ष, नदी, पर्वत और पृथ्वी – इन सबकी क्रिया दूसरे के हित के लिए ही होती है। मानव शरीर भी देने की भावना के आधार पर चल रहा है। हाथ कमाते हैं, पर क्या हाथ खाते हैं? नहीं, मुख से खाया। खाकर क्या मुख ने अपने पास रखा? नहीं, चबाकर पेट को दिया। क्या पेट ने जमा किया? नहीं। खून बनाकर हृदय में भेज दिया। हृदय ने उसे नाड़ियों में भेज दिया, नाड़ियों ने सारे शरीर में फैला दिया, इस प्रकार हाथ के पास भी रक्त आया और घूम-फिर कर रक्त सारे शरीर में चला गया। भक्ति मार्ग के शास्त्रों में ब्राह्मण को देवता कहा गया है। ब्राह्मण वही है जो लेता कम और देता ज्यादा है। थोड़ा खाया, थोड़ा पहना, थोड़ी जगह में रहा और अपना सारा समय, शक्ति, सम्पत्ति समाज के कल्याण में लगाई इसलिए वह देवता समान है।

किराए का मकान है शरीर

जितना-जितना हम अपने आत्मस्वरूप में टिकते जाते हैं, देने की भावना बलवती होती जाती है। शरीर तो किराए का मकान है। हम जानते हैं, कोई किराएदार, किराए के मकान की सजावट पर अपना धन खर्च नहीं करता। उसे अन्दर स्मृति रहती है कि क्या पता यह कब छूट जाए, मैं

क्यों समय, सम्पत्ति इस पर लुटाऊँ। जो करना होगा, इसका मालिक करेगा। इसी प्रकार आत्मअभिमानी व्यक्ति इस शरीर को किराए का मकान मानता है और इसकी सुन्दरता के लिए समय, शक्ति और धन खर्च नहीं करता। सादा जीवन, कम खर्च, अधिकतम परोपकार – यही उसका लक्ष्य रहता है।

लालच बुरी बला

लेने की भावना लालची बनाती है। एक बार एक गरीब व्यक्ति अपने अमीर पड़ोसी से चांदी के चार बर्तन उधार ले आया और लौटाते समय दो चम्मच भी उन बर्तनों में डाल दिए। अमीर ने जब दो चम्मचों के बारे में पूछा तो गरीब कहने लगा, इन चार बर्तनों ने दो बच्चों को जन्म दिया है। अमीर ने चुपचाप बर्तन रख लिए। कुछ दिनों बाद गरीब को फिर बर्तनों की जरूरत पड़ी। इस बार अमीर ने उसे सोने के बर्तन दे दिए इस लालच में कि इस बार भी बढ़े हुए बर्तन मिलेंगे। परन्तु कई दिनों तक गरीब व्यक्ति बर्तन लौटाने नहीं आया तो अमीर ने कारण पूछा। गरीब ने कहा, आपके बर्तन मर गए। यह सुन अमीर को गुस्सा आया और न्यायालय में पहुँच गया। न्यायाधीश ने भी फैसला गरीब के हक में देते हुए कहा, जो बर्तन बच्चे जन सकते हैं, वे मर भी सकते हैं। अमीर व्यक्ति को नुकसान उठाना पड़ा। इसलिए कहा जाता है, 'लालच बुरी बला।' निर्लोभी सदा सुखी रहता है। लोभ कई रूपों में हमारे सामने आता है। हमें फंसाने की कोशिश करता है। हम सावधान रहें, हमें देवता बनना है, लेवता नहीं।

छोटी लाइन में लगें

देना वास्तव में देना नहीं, लेना होता है और लेना, लेना नहीं, वास्तव में देना होता है। दिया हुआ वापस लौटेगा। हर क्रिया की तुरन्त समान और विरोधी प्रतिक्रिया होती है। हम गेंद को जमीन पर मारते हैं और वह उसी वेग से, उसी समय वापस लौटती है, हमारे न चाहने पर भी ऐसा होता है। हम गाय को, कुत्ते को रोटी देते, चींटियों को आटा डालते, पक्षियों को पानी पिलाते, क्या उनसे तुरन्त बदला मांगते हैं? नहीं ना। हम जानते हैं, हम इनके लिए जो करेंगे उसके बदले हमें भगवान देगा। हम किसी के बच्चे के जन्मदिन पर कोई उपहार लेकर गए, उस उपहार को पाकर खुशी और धन्यवाद बच्चा प्रकट नहीं करता, बच्चे के माता-पिता करते हैं और मौका मिलने पर वे बदला (रिटर्न) भी अवश्य देंगे। इसी प्रकार हम भी नेकी करते हैं तो उसका फल वो देगा। मानव यदि देगा तो अपनी हैसियत अनुसार देगा पर परमात्मा तो न्यायकारी है, कर्म की गुणवत्ता अनुसार देगा। वो समर्थ है और हमें गर्व है कि उसने हमें देने वालों की लाइन में लगाया, नहीं तो संसार में मांगने वालों की बहुत लम्बी कतार है। दाता-पन की भावना वाले तो गिने-चुने होते हैं। हम कौन-सी लाइन में लगना चाहते हैं? वैसे तो हम हमेशा छोटी लाइन का चुनाव करते हैं चाहे प्लेटफार्म पर टिकट लेनी हो, कोई बिल भरना हो, टोल नाके पर टोल देना हो, तो फिर अब भी छोटी लाइन में लगें, दाता बनें।

भगवान बनना चाहता है दाताओं का पिता

एक बार एक व्यक्ति कार साफ कर रहा था। एक व्यक्ति पास से गुजरा, पूछा, गाड़ी किसकी है? उसने उत्तर दिया, मेरे भाई की है, उसने मुझे दी है। व्यक्ति ने एक लम्बी सांस ली और कहा, काश! मेरा भी ऐसा भाई होता। तभी एक दूसरा व्यक्ति वहाँ से गुजरा, उसने भी वही सवाल पूछा और कार साफ करने वाले ने वही उत्तर दोहरा दिया। इस दूसरे व्यक्ति के मुख से निकला, काश! वो भाई मैं होता। हम पहले व्यक्ति जैसे बनें या दूसरे जैसे, यह हमारे ऊपर है। भगवान हमेशा दाताओं का पिता बनना चाहता है।

भगवान शिव कहते हैं, **''अब मास्टर दाता बनो। बाप से लिया है और लेते भी रहो लेकिन आत्माओं से लेने की भावना नहीं रखो। यह बदले तो मैं बदलूँ, यह लेने की भावना है। ऐसा हो तो ऐसा हो। यह लेने की भावनाएँ हैं। ऐसा हो, नहीं, ऐसा करके दिखाना है। हो जाए तो, नहीं, होना ही है और मुझे करना है। मुझे वायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे गुणों का सहयोग देना है, मुझे शक्तियों का सहयोग देना है। मास्टर दाता बनो। फ्राक दिल बनो। देते रहो। महासहयोगी बनो, महादाता बनो।''**

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

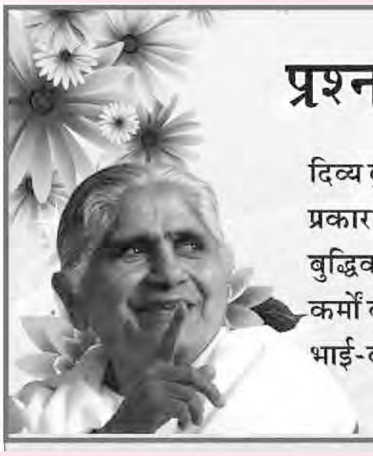

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- हम 'जी हजूर' करेंगे तो बाबा क्या करेंगे?

उत्तरः- मुझे खुशी है, बाबा मुरली में कहता है, मन्दिरों में जाकर समझाओ। बाबा जो कहता था वो सब किया है इसलिए वो ताकत अभी भी काम कर रही है। संत-महात्मागण जहाँ भाषण करते थे वहाँ मुझे भी बुलाते थे। उन मशहूर मन्दिरों में जब भाषण करती थी तब नशा चढ़ जाता था। मैं हूँ आत्मा, मेरा परमात्मा.. वो समझें कि यह क्या सुना रही है। परमात्मा को ऐसे सिर्फ पुकार नहीं रहे हैं लेकिन वो मेरा माता-पिता है, शिक्षक है, सखा है, सतगुरु है और अच्छी तरह से यह अनुभव सिर-माथे पर है। कभी भी मनमत-परमत के प्रभाव में नहीं आना है। कई हमारे भाई-बहनें मनमत पर चलते भी अपने आपको राइट समझते हैं। अगर अपनी मनमत थोड़ी भी चलायेंगे तो परमत भी छोड़ेगी नहीं। हमको अन्दर से नशा है कि हम 84 जन्म ली हुई आत्मायें हैं। साधारण आत्मा नहीं हैं। जैसे मेरे बाबा को अन्दर से बहुत-बहुत पक्का नशा है, ऐसे हमें भी नशा है। अभी तक इतनी रचना को देख फिर रचता को देखते मन अच्छा बन गया है। मन अच्छा हो, दिल खुश हो, सच्चा हो, स्वभाव सरल हो तो फिर जीना अच्छा है। स्वभाव ऐसा हो, नाराजगी की नेचर न हो। इस पर सबका ध्यान है ना। दिमाग ठण्डा, दिल सच्चा, स्वभाव सरल। विश्वास है कि हम सतयुग में पहले-पहले आयेंगे। स्थापना जब होगी तो आदि में ही हम आयेंगे, ऊपर बैठ नहीं जायेंगे। बाबा जब जायेगा ना, परमधाम में हम साथ-साथ जायेंगे। अभी तक भी कोई शान्तिधाम में बैठे हैं, अभी तक आ रहे हैं। बाबा कहते हैं, जाना तभी शुरू होगा जब आना पूरा हो जायेगा। कभी-कभी बाबा मुरली में ऐसी रहस्य भरी वन्डरफुल बातें सुनाते हैं। बाबा कहते हैं, ये बातें अन्दर सिमरण करो, स्मृति में रखो, याद का भी बहुत अच्छा पावरफुल वातावरण बनाकर रखो। शान्त रहना और प्रेम का ऐसा वायुमण्डल बनाना है तो सदा याद रखो, मैं कौन, मेरा कौन? राइट बात हो जाती है, माइट मिल जाती है। अभी लाइट-हाउस का काम शुरू हुआ है। सिर्फ हमारी कैचिंग पावर, टचिंग पावर अच्छी होनी चाहिए। जितना 'जी हज़ूर' करते हैं, उतना बाबा भी मदद करता है। यज्ञ की कोई भी सेवा सच्चे दिल से करो तो बाबा की शक्ति और दुआयें मिलती हैं। सो जाने की बजाय भण्डारे में जाकर अनाज साफ करो। कोई भी यज्ञ की सेवा में लग जाना, यह भी समझदारी का काम है। बीमारी का बहाना नहीं बनाना चाहिए।

प्रश्नः- सरल स्वभाव के लिए दिमाग कैसा हो?

उत्तरः- दिमाग ठण्डा है तो स्वभाव सरल है। जब दिमाग थोड़ा भी गर्म होता है तो स्वभाव दूसरा हो जाता है। स्वभाव अच्छा है तो सेवा हमारा फर्ज भी है। भले छोटे हैं, कोई बूढ़े हैं या बड़े हैं परन्तु सब कहते हैं, बाप समान बनना है। जो जितना बाप समान बनेंगे उतना औरों को आप समान बनायेंगे। एक-दो को नहीं देखो, खुद को देखो। सारा दिन और कोई सोच नहीं है परन्तु बाबा का बनने से सुख जो

WIDEWALLPAPERS.NET

मिला है, इतना मिला है, जो संग में आवे उसको भी यह रंग लग जाये। तो याद दिल से करनी है, सेवा मन से करनी है। कहा जाता है, मनसा, वाचा, कर्मणा माना कर्म से भी हर रोज़ यज्ञ की सेवा करने से बहुत कमाई जमा होती है। अभी जब मुरली में याद की बात आती है तो मुझे वो पुराने दिन याद आते हैं। साकार बाबा के साथ बिताये हुए दिन याद आने से अलग से याद करना नहीं पड़ता है। खाते-पीते, चलते-फिरते बाबा के साथ हैं तो वो ताकत अभी भी मिल रही है। चलती हूँ, यहाँ आती हूँ, सिर्फ बाबा याद नहीं आता पर बाबा ही सब कुछ कराता है।

प्रश्नः- संगमयुग पर बहुत कमाई जमा कैसे होती है?

उत्तरः- संगमयुग की हर घड़ी, हर घण्टे का बहुत महत्व है। सारे दिन में 8 घड़ियाँ होती हैं और 24 घण्टे होते हैं। तो संगम पर 24 ही घण्टे याद और सेवा में सफल हुए तो कहेंगे, हम पदमापदम भाग्यशाली हैं। जिसका जितना हर घड़ी, हर घण्टा सफल होता है, उसको उतनी आन्तरिक अविनाशी खुशी रहती है क्योंकि पढ़ाई में कमाई है। स्थूल पढ़ाई में तो बहुत खर्चा होता है, फिर कमाते भी खूब हैं। पढ़ाई में टाइम वेस्ट न करने वाले का महत्व होता है। भक्ति में भी भगवान कौन है, यह खोज थी इसलिए बुजुर्ग, सम्बन्धी या छोटे सब प्यार करते थे। अब खोज पूरी हुई तो अभी आप सब मुझे प्यार करते हो। सब प्यार करते हैं ना! इस पढ़ाई में कोई खर्चा नहीं, जितनी पढ़ाई पढ़ो और पढ़ाओ, इसमें नम्बरवन बनो। सेवा में जो साथी होते हैं वो एक-दो के सहयोग से बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बनते हैं, तो बहुत खुशी होती है। भले नाम किसी का भी हो, पर काम तो बाबा का है ना। कई बार, कई जगहों पर बाबा के नाम से काम होता है और कई बार किसी के अच्छे कर्म से बाबा का नाम बाला होता है। इसके लिए हमारे तन, मन, धन से कोई भी गलत काम न हो, बाबा के ऐसे आज्ञाकारी बच्चों की बहुत कमाई जमा होगी। जिस तन में बैठे हो, भाई का है या बहन का है पर दोनों को नशा है, बाबा हमारा, हम बाबा के। बाबा कहते हैं, मेरे बच्चे, मीठे बच्चे, मुरली की हेडिंग में पहले यही होता है ना। आजकल बहुत अच्छे-अच्छे गीत बने हुए हैं, ऐसे गीत सुनते रहो, याद में भी रहो। बाबा भी मेरे गीत सुनते थे तो उनको अच्छा लगता था। बड़े-बड़े मशहूर साधू-महात्मागण भगवान के लिए हमारा प्यार देख बहुत मान देते थे, अच्छा समझते थे। अभी तो भगवान मेरा बाप है। वो कहते, तू मेरा बच्चा है तो कितनी खुशी है! और खुशी कहाँ से मिलेगी? तो यह सत्संग यानी सच्चाई को जीवन में लाने का संगठन होता है। याद में कमाई है या सेवा में कमाई है? दोनों में कमाई है। याद नहीं करते हैं तो दिल खाता है जबकि याद सहज है और याद से विकर्म विनाश होते हैं। बाबा रोज़ कहते हैं, बच्चों में देह-अभिमान बहुत है, यह बाबा से देखा नहीं जाता है। देही-अभिमानी स्थिति बाबा को अच्छी लगती है। ज़रा भी देह-अभिमान न हो। किसी भी देहधारी से अगर प्यार है तो बाबा का प्यार नहीं मिल सकेगा। तो मेरे में वन परसेन्ट भी देह-अभिमान न हो।

प्रश्नः- दादी जी आपको कौन-सी धुन लगी हुई है?

उत्तरः- पूछो अपने मन से कि तू शान्त रहता है या खिट-पिट करता है? मैं रीयल बात सुनाती हूँ। विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति बनाने की अन्दर धुन लगी हुई है। ब्रह्मा बाबा को देखो, अभी तक भी वतन में बैठा है। उसको आँखों से देखा, दिल से पहचाना, बाबा अभी तो आप अव्यक्त हुए हो तो मूलवतन में जाओ। बाबा कहते, नहीं, सूक्ष्मवतन में ही रहूँगा। बड़ा होशियार है। हम सबकी स्थिति जब तक ऐसी नहीं बनी है तब तक वहाँ बैठा हुआ है। यह अनुभव कौन करता है? आपको बाबा से ऐसी फीलिंग आती है? मैं पूछती हूँ अपने से, ऐसी विकर्माजीत, कर्मातीत स्थिति बनी है? बाबा मैं कर्मातीत हूँ, अव्यक्त हूँ... बाबा, अभी क्या करूँ? तो कहता है, तुम अपने को स्थूलवतन में क्यों ले आती हो? तुम सूक्ष्मवतन में नहीं रह सकती हो क्या? हाँ बाबा, क्यों नहीं, हम भी आपके साथ सूक्ष्मवतन में रहूंगी। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

'आध्यात्मिकता और कार्यस्थल' लेख प्रकाशित करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। इससे मेरा आत्मबल दुगुना हो गया। जुलाई, 2016 का संपादकीय लेख 'गरीबी रेखा' पढ़कर अत्यंत खुशी हुई जिसमें गरीबी रेखा को पूर्णत: सटीक परिभाषित किया गया है। आज देश-विदेश की लगभग 95 प्रतिशत जनता इस रेखा के नीचे जीवन-यापन कर रही है परन्तु अज्ञानता के कारण उस रेखा से ऊपर उठने में अक्षम है। मैं ऐसी समस्त अक्षम आत्माओं के लिए मनसा सेवा द्वारा आह्वान करूँगी कि वे अपने नैतिक मूल्यों का रक्षण करते हुए, शिव परमात्मा से योग लगाकर स्वयं को गरीबी रेखा से ऊपर उठायें।

– ब्र.कु.प्रीति खत्री,
मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)

मई, 2016 अंक में 'स्वयं की तलाश', 'अन्दर जाने वाली सूचना का महत्व'; जून, 2016 अंक में 'मृत्यु से निर्भय बनें' और 'प्रश्न हमारे उत्तर दादी जी के' लेख पाठकगण के रोग, शोक, दुख, डर और समस्याएँ दूर करते हैं। उनमें शक्ति, हिम्मत, साहस और विश्वास पैदा करते हैं। इसलिए सम्पादक और लेखकों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

– ब्र.कु. ज्ञानेश्वर भाई,
शाहपुर, बुरहानपुर (म.प्र.)

जुलाई, 2016 अंक में 'मेला और झमेला' लेख पढ़ा। बहुत ही ज्ञानवर्धक है। सांसारिक मेले में गई आत्मा जब परमात्मा से बिछुड़ जाती है तब उसकी होने वाली आत्मिक स्थितियों का बहुत सुन्दर वर्णन इसमें है। सब आत्माओं को परमपिता परमात्मा शिव बाबा से सम्बन्ध बनाए रखने की प्रेरणा यह लेख देता है।

– ब्र.कु.रतन, सिकन्दराराऊ (उ.प्र.)

जुलाई, 2016 के अंक में प्रकाशित 'जीवनदायी जल को दें जीवनदान' लेख में कहा गया है कि 'जल से सेवा' तो सब करते हैं, उसी प्रकार 'जल की सेवा' करनी है। यह सेवा हो सकती है स्नेह के वायब्रेशन फैलाकर। सच में यह कार्य सब करें तो भविष्य में जल की विकट स्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती और 'धर्म की परिभाषा' लेख बड़ा ही सटीक और उत्तम लगा। सच में ज्ञानामृत पत्रिका अज्ञान में मूर्च्छित लोगों के लिए संजीवनी बूटी का काम करती है। इसके लिए तहेदिल से सम्पादक को धन्यवाद।

– वीना ददलानी, भैरागढ़ (भोपाल)

तू तनाव छोड़ दे

ब्रह्माकुमार ललित, शान्तिवन

जो हुआ वो अच्छा, हो रहा अच्छा ही है,
होगा वो भी अच्छा, तू तनाव छोड़ दे।

भूल मुझसे होती है, भूल तुझ से होती है,
बदला ना ले पर बदल जा, तू तनाव छोड़ दे।

स्वीकार कर, स्वीकार कर, काहे तू इंकार कर,
बनी बनाई बन रही, तू तनाव छोड़ दे।

जिंदगी एक खेल है, हँसते-गाते खेल ले,
हार कर भी जीत ले, तू तनाव छोड़ दे।

प्रेम कर, तू प्रेम कर, माफ कर, तू माफ कर,
शान्ति, सत्य, धैर्य रख, तू तनाव छोड़ दे।

आत्मा तू है अमर, परमधाम तेरा घर,
शिव पिता को याद कर, तू तनाव छोड़ दे।

फैशन की बढ़ती महिमा
नारी की गिरती गरिमा

ब्रह्माकुमारी अनुभा, अलवर

एक गाँव में सेवा करके हम सायंकाल वापिस लौट रहे थे। रास्ते में एक परिचित दम्पति से मिलना हुआ जो किसी वैवाहिक समारोह में शामिल होने जा रहे थे। उनके साथ उनकी किशोरवय कन्या भी थी। बेटी का परिचय करवाते समय वे कुछ सकुचा रहे थे। कारण समझ में आ रहा था, बेटी का भड़कीला पहनावा जो फैशन के अनुकूल लेकिन मौसम और मर्यादा के प्रतिकूल था। माँ की पीड़ा शब्दों में उभरी–''कितना कहा कि ठण्ड लग जायेगी लेकिन मानती कहाँ है।'' कन्या इस सारी बातचीत से बेपरवाह अपने बालों और नाखूनों में ही ध्यान लगाये थी। शालीनता और समझदारी का उसके चेहरे पर कोई चिह्न नहीं था।

रगों में घुलता जहर

विचार चला कि सादगी और सभ्यता को दरकिनार कर, सामाजिक मूल्य और मान-सम्मान की धज्जियाँ उड़ाता, सीखने-समझने की उम्रधारा को दिशाभ्रमित करता हुआ यह कैसा फैशन है! युवा होती लड़कियों की रगों में टीवी, इण्टरनेट, मोबाइल, मैगजीन, शादी-पार्टी आदि के द्वारा घुल रहा यह जहर उनके शील और गुणों को मृतप्राय: कर रहा है। अब तो ग्रामीण स्वच्छ संस्कृति में भी फैशन की गंध फैलने लगी है। शहर का फैशन तुरन्त गाँव में आ जाता है। पहले साल में दो जोड़ी कपड़े सिलवाये जाते थे, अब नित नये फैशन के वस्त्रों की भरमार है। पहले कपड़े की सिलाई करने में भाव होता था कि कैसे सुन्दर तरीके से तन को ढका जाये। अब स्थिति इतनी विकट है कि– 'जब तक हड्डी-माँस न दे दिखाई, पसन्द आती नहीं सिलाई।' क्या नारी के पास दिखाने के लिए गुण नहीं, कला नहीं, योग्यता नहीं, जो उसे पल-पल मिट रही मिट्टी का सहारा लेना पड़ रहा है।

नारी मात्र देह नहीं

क्या नारी मात्र एक शरीर है, उसकी पहचान शरीर से है? कैसी विचित्र स्थिति है कि समाज में जहाँ-तहाँ कार्यक्रम-उत्सव में, टीवी, मैगजीन आदि में पुरुष (सुटेड-बुटेड) तो दिखाई देंगे लेकिन नारी नहीं, मात्र नारी शरीर देखने में आते हैं। एक दर्शन होता है देवियों का जिनके सामने मनुष्य का सिर श्रद्धाभाव से झुक जाता है, अधम से अधम व्यक्ति के मन में भी सात्विक भावों का उदय होने लगता है। और एक दर्शन है आज की लज्जाहीन नारियों का जिनको देखने से सज्जन मनुष्य के मन में भी तामसिक भाव जाग्रत हो जाता है।

फैशन में फँसी नारी
तुने गँवाई इज्जत सारी।
वंदनीया तू पूजनीया थी
अब महज एक शरीरधारी।

नवीनता मनुष्य की स्वाभाविक पसन्दगी है और फैशन इस नवीनता की अभिव्यक्ति है लेकिन नवीनता का यह अर्थ नहीं कि हम संस्कारहीन हो जायें, संवेदनाहीन हो जायें और शर्महीन हो जायें। और फिर इस नवीनता के सारे प्रयोग नारी पर क्यों, नारी का स्वरूप बिगाड़ने पर क्यों? अरे! नारी तो माँ और बहन जैसी लगे, देवी जैसी लगे, तभी

उसका सम्मान और गौरव सुरक्षित रहेगा।

नारी तू कर नवयुग-निर्माण

इस संसार को बनाने में पुरुष का इतना हाथ नहीं है जितना नारी का। नारी अपने कर्मों से सृष्टि पर स्वर्ग या नर्क के द्वार खोल सकती है। नारी नर्क का द्वार कहने के पीछे भाव यही रहा होगा कि जब नारी अपने शील, मर्यादा और ईश्वर प्रदत्त गुणों को छोड़कर अमर्यादित उच्छृंखल व्यवहार करती है तो संसार के लिए नर्क के द्वार खुल जाते हैं। लेकिन जब यही नारी त्याग, तपस्या, सादगी और सेवा की प्रतिमूर्ति देवी स्वरूप प्राप्त करती है तो संसार स्वर्ग बन जाता है। वर्तमान में एक तरफ तो नारी दैहिक सौन्दर्य और सजावट की होड़ में होश गँवाए, कलियुग को चरम सीमा तक पहुँचा रही है। दूसरी तरफ परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर चलकर आन्तरिक सौन्दर्य और दिव्यगुणों के शृंगार से देवीतुल्य बन धरा को स्वर्ग बना रही है। नारी की सुन्दर दिखने की और प्रशंसा पाने की चाह पर **परमपिता परमात्मा कहते हैं कि हे नारी! तू निज आत्मा का गुणों से शृंगार कर सुन्दर बन और सच्ची प्रशंसा प्राप्त कर। आत्मा के बिना तो शरीर मुर्दा है और मुर्दे का कैसा शृंगार! आत्मिक सौन्दर्य ही सच्चा सौंदर्य है और गुणों का शृंगार ही सच्चा शृंगार है। ऐसी गुणों से शृंगारी हुई सुंदर सजीव नारी मूरत ही सतयुग स्थापना का आधार है।**

इसलिए हे नारी! अपने चारों ओर के संसार को विवेक की आँखें खोलकर देख। फैशन की फिसलन भरी राह पर कदम न रख। देह अभिमान की दलदल में मत फँस। स्वयं भगवान तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं। तू महानता के पथ का वरण कर! तेरे हाथों में तकदीर है संसार की। तू हाथ बढ़ा, कदम उठा। मानवता को श्रेष्ठ संस्कार सिखा। इस संसार को सुन्दर स्वर्ग बना। इसी में तेरे श्रेष्ठ जीवन की सार्थकता है। ❖

जब ज्ञानामृत ने किया कमाल

डॉ.शिवराम (सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक पशुपालन), सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

मैं और मेरी युगल जून, 2005 में ईश्वरीय ज्ञान में आए और तभी से ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ना प्रारम्भ किया। पत्रिका पढ़ने मात्र से मन को शान्ति मिलने लगी और मेरी तमोप्रधानता धीरे-धीरे कम होने लगी। फरवरी, 2012 में मधुबन मुख्यालय (आबू पर्वत) जाने का सौभाग्य मिला। वहाँ पहुँचते ही संकल्प चला कि इतनी उच्च कोटि की पत्रिका, जो गीता ज्ञान से भरपूर है, कुछ मित्र-सम्बन्धियों को भी पढ़ाई जाये।

मन में अंकुरित संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए पेन-कागज उठाए एवं 25 लौकिक मित्र-सम्बन्धियों की सूची तैयार की और पहुँच गया ज्ञानामृत भवन में। वहाँ मौजूद भाई जी ने मृदुल व्यवहार के साथ बिठा लिया व मेरी बनाई सूची के सभी नाम व पते कम्प्यूटर में दर्ज कर लिये। ये पते सीतापुर जनपद एवं पड़ोसी जनपदों के ग्राम/कस्बों व शहरों के थे। सभी को घर बैठे एक वर्ष तक पत्रिका मिलती रही। इनमें से कुछ आत्माओं से मधुर स्नेह था, कुछ के साथ पुराने स्वभाव-संस्कार के कारण टकराव था, यहाँ तक कि बोल-चाल भी कम ही होती थी।

वाह बाबा वाह, वाह मेरा भाग्य, वाह ज्ञानामृत वाह! कुछ लोगों के फोन आने प्रारम्भ हुए, उन्होंने पत्रिका की प्रशंसा की एवं ईश्वरीय ज्ञान के सम्बन्ध में उनसे चर्चा भी हुई। बाबा कहते हैं, संस्कार मिलाओ पर यहाँ तो ज्ञानामृत पत्रिका ने ही संस्कार मिलन करा दिया। सभी के साथ सम्बन्ध मधुर हो गये। निकट के सेवाकेन्द्रों पर जाकर 10-11 परिवारों ने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया, 9 आत्मायें मधुबन मुख्यालय (आबू पर्वत) की यात्रा करके गईं। अपने घर/मोहल्ले में 5-6 भाइयों ने ईश्वरीय सेवायें भी कराईं। ये सभी लौकिक मित्र-सम्बन्धी अब अलौकिक ईश्वरीय परिवार से जुड़ गये। मन-सुमन बार-बार कहने लगा, ''ज्ञानामृत ने वास्तव में किया कमाल।'' ❖

अपने को कर्त्ता नहीं, निमित्त समझो

ब्रह्माकुमार सुखबीर सिंह सैनी, सहारनपुर

जिस दिन से मुझ आत्मा को ईश्वरीय ज्ञान मिला, उसी दिन से और उसी समय से मैं और मेरी युगल दोनों बाबा के हो गये। उसके बाद से हमारी धारणा में, हमारे निश्चय में कभी कोई कमी नहीं आई। जैसे-जैसे ज्ञान मिलता गया, धारणा और बाबा के प्रति प्यार और अधिक बढ़ते चले गये। बाबा का परिचय लुधियाना निवासी बड़ी बेटी ने कराया। मेरे ज्ञान में आने से एक सप्ताह पूर्व बेटी और दामाद दोनों ज्ञान में आ चुके थे।

बीमारी ठीक नहीं हुई

ज्ञान में आने से पूर्व मैं भक्ति में मग्न था और सोरायसिस चर्मरोग से पीड़ित था। हर पल, हर घड़ी भगवान को याद करते हुए उनसे एक ही बात कहता था कि मुझे इस बीमारी से मुक्त कर दो। इसके लिए सुबह-शाम यहाँ तक कि रात-रात जागकर भी भक्ति करता था। मन्दिरों में जाकर आँसू बहाता था लेकिन बीमारी ठीक नहीं हुई। कई बार मन में आत्महत्या करने की बात आई लेकिन फिर परिवार के बारे में सोचकर विचार बदल लेता था। लगभग 130 डॉक्टरों से इलाज कराया, बहुत पैसा लगाया, यज्ञ, तप भी कराये लेकिन बीमारी ठीक नहीं हुई।

बाबा ने बीमारी ठीक की

एक दिन सेवाकेन्द्र पर जब निमित्त बहन ज्ञान-मुरली सुना रही थी तो उसमें बाबा ने कहा कि तुम अपनी सभी चिंतायें मुझे दे दो। मैंने अमृतवेले बीमारी के बारे में बाबा के सामने संकल्प रखा। मैंने कहा, बाबा, आप कहते हो कि तुम स्वर्ग के मालिक बनोगे लेकिन मैं तो बीमार हूँ, क्या आप मुझ बीमार को स्वर्ग (सतयुग) लेकर जाओगे? कुछ समय बाद ही किसी ने मुझे एक डॉक्टर का पता बताया, मैं इलाज के लिए उसके पास गया तथा कुछ दिनों तक इलाज कराने के बाद पूर्ण स्वस्थ हो गया। बाबा की कृपा से अब पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ।

बाबा चलाते हैं विद्यालय को

बाबा के ज्ञान में आने से पूर्व मैं अंग्रेजी का प्रवक्ता था, मन लगाकर छात्रों को पढ़ाता था तथा जो भी कार्य मुझे सौंपा जाता, ईमानदारी तथा मेहनत से पूरा करता था। इससे सभी मुझसे खुश रहते थे। मेहनत तथा अच्छे व्यवहार के कारण मैं छात्र-छात्राओं में काफी लोकप्रिय रहा। इसी बीच विद्यालय के प्रधानाचार्य जी का तबादला हो गया तथा चुनाव के उपरान्त नयी प्रबन्ध समिति को कार्यभार सौंपा गया। नयी प्रबन्ध समिति ने मेरी ईमानदारी तथा मेहनत को देखते हुए मुझे प्रधानाचार्य का कार्यभार सौंप दिया। सभी साथियों के सहयोग से मैंने विद्यालय की बिगड़ी हुई व्यवस्था को पटरी पर लाने का प्रयास किया। इस कार्य में बाबा की मदद हर पल मिली। मैं बाबा का आह्वान कर, बाबा को प्रधानाचार्य की सीट पर बैठने का अनुरोध करता हूँ तथा सभी कार्य, सभी समस्याएँ उन पर छोड़कर बेफिक्र बादशाह बन घूमता रहता हूँ। बाबा सही ढंग से विद्यालय को चलाते हैं।

बाबा ने दिलाई क्लीन चिट

कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक चलता रहा लेकिन मेरा ईमानदारी से काम करना कुछ साथियों को अच्छा नहीं लगा। वे मेरे विरोधी हो गये और मुझे किसी न किसी रूप से फँसाने की कोशिश करने लगे। उन्होंने आर.टी.आई. के तहत सूचना माँगी तथा मेरी जाँच कराई लेकिन बाबा मेरे साथ थे इसलिए आर.टी.आई. तथा विभागीय जाँच में

बाबा ने मुझे क्लीन चिट दिला दी। इसके बाद भी कई परीक्षाएँ आईं पर सच्चे दिल की याद ने उन्हें भी पहाड़ से राई और राई को भी रूई बनाकर मुझे विजयी बनाया। बाबा का बहुत-बहुत शुक्रिया।

मैं सभी बाबा के बच्चों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि जहाँ बाबा साथ है वहाँ कभी हार हो नहीं सकती बशर्तेकि हम बाबा को हर कार्य में आगे रखें। अपने आपको कर्त्ता नहीं बल्कि निमित्त मात्र ही समझें, कभी अहंकार का भाव मन में ना आये। ❖

आदतों की गुलामी

ब्रह्माकुमार प्रेम नागपाल, फरीदाबाद

किसी ने ठीक कहा है, आदत वो रस्सा है जिसे मानव अपने हाथों से बँटता है और फिर उसी में बंध भी जाता है। आदत की गुलामी सबसे बड़ी गुलामी है जिससे कोई अन्य मुक्त नहीं कर सकता, स्वयं की लगन और पुरुषार्थ से ही इससे मुक्त हुआ जा सकता है। इस पर एक कहानी याद आती है –

एक बार एक राही, जो जंगल से गुजर रहा था, रास्ता भटक गया। रात घिरने लगी तो घबराने लगा पर दूर जलती एक रोशनी को देख उस ओर चल पड़ा। रोशनी एक घर से आ रही थी, दरवाजा खोलकर वह अन्दर चला गया और एक सुन्दर स्त्री को सोफे पर बैठे देखा। राही ने उसे अपनी परिस्थिति बताई, रात भर ठहरने की अनुमति माँगी और कहा, सुबह अपने रास्ते चला जाऊँगा।

स्त्री ने जवाब दिया, तुम जितने दिन चाहो यहाँ रह सकते हो, तुम्हें अच्छा खाना और आराम मिलेगा, मैं सिर्फ प्रतिदिन तुम्हारे शरीर पर एक धागा बाँधूंगी। राही मान गया, उसे बढ़िया बिस्तर, खाना दिया गया, उसे अच्छा लगा, वह वहीं रुक गया। रोज बांधा जाने वाला एक-एक धागा मजबूत रस्सी बन गया। एक दिन उसका मन हुआ कि मैं यहाँ से चला जाऊँ पर वह पूर्णत: बंध चुका था। जब उसने उस औरत का असली चेहरा देखा तो पता चला कि वह एक डायन थी जो अपने चंगुल में फँसा कर अनेकों का अन्त कर चुकी थी, इस राही के जीवन का भी उसने अन्त कर दिया।

क्या आप जानते हैं, यह राही कौन है और यह डायन कौन है? राही हैं हम सब जो पिता परमात्मा का घर छोड़कर इस सृष्टि-मंच पर पार्ट बजाने आए पर अपने पार्ट द्वारा दूसरों को सुख देने के लक्ष्य से भटक कर इस दुनिया के जंगल में भटक गए और तब मिली एक सुन्दर स्त्री जिसका नाम है आदत। हम भी आदतों के चंगुल में फँसते चले गए। कोई ने काम विकार की आदत बना ली, कोई ने क्रोध की, कोई ने लोभ की, कोई ने अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत की आदतें बना लीं, कोई ने बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा, शराब तथा अन्य अनेक प्रकार के नशों की आदत बना ली। शुरू में तो इस सुन्दर स्त्री रूपी आदत के साथ रहना, खाना अच्छा लगा पर जब इससे छूटने की इच्छा पैदा की तो पता चला कि यह केवल ऊपर से सुन्दर पर भीतर से डायन है, इसने हमें पूरी तरह से बांध लिया है, इसका आदत रूपी धागा, पक्के संस्कार रूपी रस्सी में बदल चुका है। आदत रूपी डायन कइयों के जीवन को प्रतिदिन लील रही है। डायन से मुक्त करने वाली एक ही शक्ति है और वह है ईश्वरीय शक्ति, जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में राजयोग के अभ्यास से प्राप्त होती है। इस शक्ति से लाखों लोग इस डायन के चंगुल से छूटकर आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ❖

प्रतिशोध नहीं, आत्मशोध

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

शोध शब्द का अर्थ होता है खोज परन्तु जब इस शब्द से पहले 'प्रति' अव्यय लग जाता है तो इसका अर्थ हो जाता है बदला। बदला लेने वाला एक प्रकार से शोध (खोजबीन) तो करता है परन्तु वह सामने वाले की करता है। इस अर्थहीन खोज का उसे कोई मूल्य नहीं मिलता बल्कि वह अपने अमूल्य पलों को नष्ट कर देता है। मूल्य तब मिले जब वह प्रतिशोध की बजाय आत्मशोध करे अर्थात् स्वयं की जाँच करे। इससे उसके समय और शक्तियों पर व्यर्थ की आँच नहीं आएगी।

कीमती संकल्प हुए स्वाहा

बदला शब्द भी हमें सन्देश दे रहा है कि हम क्या मांग रहे हैं? बद माना बुरा और ला माना लाओ। भावार्थ यही हुआ कि हम आह्वान कर रहे हैं कि बुराई को हमारे पास ले आओ। जिसके भीतर बदला लेने की अग्नि सुलगती है उसे यह पता ही नहीं चलता कि इसे सुलगाए रखने के लिए वह अपने कितने कीमती संकल्प ईंधन के रूप में इसमें झोंक चुका है। झोंकते रहने में महीनों और वर्षों गुजर जाते हैं। इस अन्तहीन निरर्थक प्रक्रिया में वचन और कर्म की शक्ति का ह्रास भी कम नहीं होता।

बदलें अपनी चाहना को

किसी ने हमारी चाहना के प्रतिकूल व्यवहार किया और हम बदले पर उतारू हो गए, क्या हमारी हरेक चाहना ठीक है? हम दूसरे को बदलने की बजाय अपनी चाहना को क्यों नहीं बदलते? यह हमारा झूठा अहंकार है कि हम बदला लेकर उसका बहुत कुछ बिगाड़ देंगे, हाँ, हमारा बहुत-कुछ अवश्य बिगड़ता जा रहा है। क्या हमने कभी एकान्त में बैठकर आकलन किया कि इस प्रतिशोध की प्रवृत्ति ने हमारा कितना नुकसान किया? पिछले 10 सालों से (कम या अधिक समय से) हम इस बोझ को उठाए-उठाए फिर रहे हैं, क्यों? क्या इसके बदले कोई धन, पद या मान मिला? नहीं ना, फिर इसे ढोने की मेहनत क्यों?

टूटते धीरज को सम्भालिए

हमें जीवन में कोई अभाव है, इसका कारण जिसे भी समझेंगे, उसके प्रति क्रोधाग्नि अन्दर भड़कती रहेगी परन्तु जिसे कारण समझ रहे हैं वह निर्दोष है, दोषी तो मेरा वह कर्म है जो मुझसे हो गया था और अब उसी कर्म का कड़वा फल सामने पाकर धीरज टूट रहा है। मुझे टूटते धीरज को सम्भालना है, न कि धीरज खोकर बदला लेने का एक नया विकर्म और खड़ा कर लेना है।

पुरानी स्मृतियों का धुँआ और गर्द भीतर उठते रहते हैं कि उसने ये किया, इसने यह नहीं दिया, अमुक ने यह बोला आदि-आदि। जैसे गर्द और धुएँ से भरे वातावरण में कुछ भी साफ दिखाई नहीं देता, इसी प्रकार हमारी समझ भी धुंधली हो जाती है। हमें सूझता ही नहीं कि क्या ठीक है, क्या गलत है, क्या करना है, क्या नहीं करना। यह धुँआ हटे तो परखने और निर्णय करने की शक्तियाँ कर्म में आ सकें।

स्मृतियाँ नहीं, जहर बुझे तीर

बदले की भावना एक धीमा जहर है जिसे पात्र में डाले बिना ही हम बूंद-बूंद पीते रहते हैं और अमर आत्मा को क्षीण कर उसे मृत समान बना लेते हैं। जिनके प्रति बदले की आग को संकल्पों की हवा दे-देकर सुलगाए बैठे हैं, वे हजारों मील दूर बैठे चैन की नींद सो रहे हैं, उनके चित्त में हमारी स्मृति तक नहीं है, वे उस घटना को दफना चुके हैं पर हम उसे रोज कब्र से निकाल पुनर्जीवित करने में समय लगा रहे हैं। जिनके प्रति यह आग है वे वर्षों से हमें मिले

नहीं, आगे कभी मिलने की सम्भावना नहीं, वे मिलें भी तो कुछ मांगेंगे नहीं, हमें कुछ देना नहीं, फिर भी हम उनकी उपस्थिति के भ्रम में जीते हैं और नाहक उनके कदमों की आहट सुनते रहते हैं। जला दीजिए इन स्मृतियों को, ये स्मृतियाँ नहीं, जहर बुझे तीर हैं जो आत्मा स्वयं ही स्वयं को चुभा रही है।

गहरे उतर जाएँ आत्मचिन्तन में

प्रतिशोध की दवा है आत्मशोध। हम आत्मा के चिन्तन में गहरे उतर जाएँ। भीतर के नेत्र से आत्मा के उजले स्वरूप को देखते हुए उसमें डूबें और महसूस करें कि चमचमाते ज्योतिबिन्दु पर प्रतिशोध के काले दाग टिक ही नहीं सकते। ये दाग तो आत्म स्वरूप की विस्मृति के कारण हैं। अपने इस उजले रूप से इस प्रकार बातें करें, रूहरिहान करें, ''किसी से बदला लेंगे तो वह फिर हमसे लेगा, इस प्रकार यह कड़ी प्राणान्त तक या उसके बाद भी चलती रहेगी। क्या ही अच्छा हो, हम अपने को बदल लें। अपनी ऊर्जा अपने परिवर्तन में खर्च करें।'' एक कहानी याद आती है –

एक राजा ने मन्दिर में प्रवेश करते समय अपनी पादुकाएँ द्वारपाल के संरक्षण में छोड़ दी। द्वारपाल ने देखा, रेशममढ़ी पादुकाओं पर ओसकणों के साथ कुछ धूलकण भी आ गए हैं। उसने अपने अंगोछे से पोंछने का यत्न किया। अंगोछा मैला था, पादुकाएँ थोड़ी और मैली हो गई। राजा लौटा, दृष्टि पादुकाओं पर पड़ी, क्रोध आ गया, कड़ककर पूछा, किसने मैली की? द्वारपाल भयभीत होकर बोला, क्षमा करें महाराज, सेवक से यह भूल... वाक्य पूरा होने से पहले ही उसके सिर पर पादुका का तीव्र प्रहार हुआ, सिर फटा, रक्त बहने लगा। राजा तो राजभवन चला गया लेकिन प्रतिशोध की ज्वाला में जलता हुआ द्वारपाल अपने घर गया और अन्न-जल ग्रहण करना छोड़ दिया। पत्नी ने यह देखा तो समझाया, इस अग्नि में आप अपनी शक्तियों को क्यों नष्ट कर रहे हो, बदला लेने का उपयुक्त मार्ग मैं बताती हूँ, उठिए। वे उठे, स्नान किया, भोजन किया और पत्नी के कहे अनुसार विद्याध्ययन के लिए वाराणसी चले गए। दस वर्ष के कठोर अध्ययन के बाद आचार्य बनकर लौटे।

झुक गए राजा

राजा ने अपनी अस्वस्थ माता के उपचार के लिए यज्ञ किया और इन्हीं आचार्य को यज्ञ का ब्राह्मण नियुक्त किया। यज्ञ सम्पन्न होने के बाद दक्षिणा में उन्होंने राजा की कोई भी पुरानी पादुकाएँ मांगी और प्रतिदिन उनकी पूजा करने लगे। एक दिन राजा ने अपनी पुरानी पादुकाओं के प्रति इतनी श्रद्धा और लगाव का कारण पूछा। द्वारपाल ने कहा, राजन, इन्हीं की कृपा से आज इस पद पर विभूषित हूँ और फिर पूरी कहानी सुना दी। इस विलक्षण प्रतिशोध से राजा अभिभूत हो उठे। उन्होंने द्वारपाल का सम्मान किया और राजपुरोहित का पद प्रदान कर दिया। द्वारपाल ने प्रतिशोध की अग्नि में जलने की बजाय स्वयं के शोध का मार्ग प्रकाशित किया और इस प्रकाश ने उसे इतना चमकाया कि राजा को स्वयं झुकना पड़ा।

भगवान शिव भी कहते हैं, ''सर्व खजानों की व श्रेष्ठ भाग्य की चाबी एक ही शब्द है 'बाबा।' यह चाबी अटक क्यों जाती है? क्योंकि राइट की बजाय लेफ्ट की तरफ घुमा देते हैं। स्वचिन्तन की बजाय परचिन्तन, स्वदर्शन के बदले परदर्शन, बदलने की बजाय बदला लेने की भावना रख चाबी उल्टी घुमा देते हैं, तो खजाने होते हुए भी भाग्यहीन खजाने पा नहीं सकते।''

चित्त पर रखें उजली आत्माओं को

ईश्वरीय खजाने पाने के लिए चाबी सीधी तरफ घुमाएँ अर्थात् बदला लेने की बजाय बदलकर दिखाएँ, प्रतिशोध को आत्मशोध में बदलें। जिन लोगों की बुराइयाँ चित्त में रखी रहती हैं उनसे ही बदला लेने की भावनाएँ जागृत होती हैं। मान लिया कि वो लोग बुरे हैं तो हम क्या चाहते हैं? क्या यह कि वो बुरे ही बने रहें? जैसे कोई चीज मैली हो

और हम सुबह-शाम यह राग आलापते रहें, अमुक वस्तु बड़ी मैली है, बड़ी मैली है, तो क्या वह साफ हो जाएगी? नहीं ना। उसे मेहनत करके साफ करें या किसी से करवाएँ, तब तो उसके मैल के चिंतन में फँसी हमारी वृत्ति बाहर निकलेगी। जो वृत्ति किसी के मैल का चिंतन कर रही है वह सार्थक चिंतन, कर्म का चिंतन, ईश्वर का चिंतन कैसे कर सकेगी? हम हर बन्धन से मुक्ति चाहते हैं तो फिर चित्त पर रखे इस मैल से भी तो मुक्त होना सीखें। जैसे जमी हुई मैल को उतारने के लिए बहुत रगड़ाई करनी पड़ती है, इसी प्रकार भीतर की मैल उतारने के लिए बार-बार स्मरण करें, ''कर्म की कलम जब भाग्य लिख रही थी तब इनके हिस्से जो आया, ये कर रहे हैं। अन्य आत्माओं की तरह ये भी परमात्मा पिता के बच्चे हैं, मूल रूप में उन्हीं के समान गुणवान हैं, उन्हीं जैसा रूप इनका है। मेरा वो कर्म रूपी धागा जो इनके पार्ट के साथ उलझ गया है योगबल से पूरा सुलझना ही है। मैं आत्मा देख रही हूँ, प्रकाश के कार्ब में ये आत्माएँ चमक रही हैं, मैंने चित्त पर से मैल की पोटली हटाकर उस स्थान पर इन प्रकाशमान (उजली) आत्माओं को रख लिया है, चित्त पर रोशनी फैल गई है। वाह बाबा वाह, आपने चित्त को स्वच्छ कर दिया।'' ❖

राजयोग एक गहन तपस्या

ब्रह्माकुमारी प्रीति खत्री, सहायक लेखाधिकारी, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)

शाश्वत सत्यों से सम्बन्धित गहरे एवं उद्देश्यपूर्ण विचारों के चिंतन को ही योगाभ्यास कहते हैं। यह अवचेतन (आत्मा) तक पहुँचने का एक शाश्वत माध्यम है। योग से हम विभिन्न प्रकार की विचार प्रणालियों में अंतर करके सकारात्मक एवं लाभदायक विचारों का चुनाव करना सीखते हैं जो हमें वांछित लक्ष्य तक पहुँचाने में समर्थ हैं। राजयोग, बिना किसी कष्ट के तन-मन को सुकून देने वाली एवं अनंत प्राप्तियाँ कराने वाली अंतर् की रूहानी यात्रा है। यह आत्मा का परमसत्य परमात्मा से मिलन कराती है। इसकी एक पल की अनुभूति अपार खुशी देती है। ऐसी अनोखी यात्रा यदि पूर्ण तैयारी के साथ की जाये तो पूर्ण आनंद मिलता है।

अभ्यास की विधि

अपने मन को अंदर की तरफ ले जायें अर्थात् उसे बाह्य दृश्यों से मुक्त करें। आत्मा के मूल सात गुणों (ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति) को इमर्ज करें। अपने आप को देह, देह की दुनिया से दूर करके पूर्णत: आत्माभिमानी स्थिति में स्थित हो जायें ताकि परमसत्ता के साथ पूर्णत: जुड़ सकें। महसूस करें उस अलौकिक आनंद को जो परमात्मा पिता के सान्निध्य से प्राप्त हो रहा है।

आज के दौर में शारीरिक योग के साथ-साथ राजयोग की ज्यादा आवश्यकता है, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को जो पथभ्रमित एवं दिग्भ्रमित है। राजयोग समस्त मानवजाति के लिये रामबाण औषधि है। अत: योग दिवस के अलावा भी सभी को प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।

राजयोग से प्राप्तियाँ

राजयोग के अभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक थकान दूर होती है, तन-मन तरोताजा हो जाते हैं। मन पूर्णत: परमात्म मिलन के लिए आतुर रहता है। पूरे दिन की दिनचर्या के संकल्पों का चित्रण मन में आ जाता है, आत्म-मंथन करने से बुरे संकल्पों को छोड़ने एवं शुभ संकल्पों को बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। अमृतवेले के समय परमात्म मिलन का अनुभव ताजगीपूर्ण दिनचर्या प्रदान करता है अत: कभी भी इस शुभ अवसर को गंवाना नहीं चाहिए। ❖

विश्वास की शक्ति

ब्रह्माकुमार योगेश, दीनदयाल नगर (ग्वालियर)

विश्वास में गजब की शक्ति है। हम जिन बातों में विश्वास रखते हैं वो हम पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। वर्तमान समय बहुत-से दुखों का कारण हमारा विश्वास, हमारी मान्यतायें भी हैं। जब हम सत्य बातों में, सकारात्मक बातों में विश्वास करते हैं तो सफल होते हैं लेकिन यदि नकारात्मक बातों में विश्वास रखते हैं तो अवश्य ही जीवन दुखदायी बन जाता है। अतः प्रत्येक पहलू को देखते, समझते हुए सकारात्मक बातों में ही विश्वास रखना चाहिए।

कैसे जानें, विश्वास सकारात्मक है या नकारात्मक?

यदि हमें किसी बात या घटना से डर लगता है तो अवश्य हमें उस की नकारात्मकता पर विश्वास है। उदाहरण के लिए, किसी का विश्वास है 'मेरे साथ हमेशा बुरा होता है', यह विश्वास उसके जीवन में खुशी आने नहीं देगा। हम चाहे उसे खुशी, आनंद की कई बातें सुनाएँ परंतु जब तक उसका यह विश्वास टूट न जाये तब तक वह खुश नहीं हो सकता। हमारे विचार जैसे हैं, उसी प्रकार की घटनाओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और वे घटनायें बार-बार घटित होने से विश्वास और भी गहरा होता जाता है। किसी का विश्वास हो सकता है, 'मैं सफल नहीं हो सकता', 'लोग बुरे होते हैं', 'क्रोध के बगैर काम कैसे होगा', 'मैं यह नहीं कर सकता' 'टेन्शन तो जरूरी है', 'मेरा योग नहीं लगता', 'मुझे कुछ नहीं दिखता' जब तक हम ऐसे वाक्यों में विश्वास रखेंगे तब तक हम जो पाना चाहते हैं उससे हमेशा दूर ही रहेंगे। हम नकारात्मक बात में विश्वास रखते हैं, हमारा मन कसकर उसे पकड़ लेता है और हमें दुख, अशान्ति, डर, चिन्ता, भय का अनुभव होता है। इसके विपरीत यदि हम सकारात्मक बातों में विश्वास रखते हैं जैसे – 'मैं सब कुछ कर सकता हूँ', 'कुछ भी कठिन नहीं', 'टेन्शन मुझे छू भी नहीं सकता', 'परमात्मा मेरा साथी है' तब हम सफलता की अद्‌भुत शक्ति का अनुभव करेंगे। यदि जीवन में दुख, कष्ट, डर, अशान्ति आदि का अनुभव होता है तो अवश्य हमारा विश्वास नकारात्मक है और यदि प्रेम, आनंद, शान्ति, सुख आदि का अनुभव करते हैं तो हमारा विश्वास सत्य और सकारात्मक है।

बदलें अपने विश्वास

यदि हम नकारात्मक मान्यताओं को सकारात्मक विश्वास में बदल दें तो जीवन सुखमय-शान्तिमय बन जायेगा। कुछ लोग पुरानी मान्यताओं, रीति-रिवाजों, कर्मकाण्डों से चिपके रहते हैं, उन्हें बदलना या छोड़ना ही नहीं चाहते तो वे जीवन में नयेपन व सुख-शान्ति का अनुभव भी नहीं कर पाते हैं। परिस्थिति भले विपरीत हो पर यदि हम सकारात्मक हों तो परिस्थिति धीरे-धीरे हमारे अनुकूल हो जायेगी। विश्वास जीवन की शक्ति है। जिन बातों में हम विश्वास करते हैं आत्मा की सारी शक्तियाँ उसी ओर बहने लगती हैं। महाभारत में एकलव्य का वर्णन है, उसने गुरु द्रोण के न सिखाने पर भी सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी बनकर दिखाया क्योंकि उसने विश्वास को अपनी शक्ति बनाया। आज भी भक्तों को उनकी इच्छानुसार फल कैसे प्राप्त हो जाता है जबकि देवता तो हजारों साल पहले थे। उनकी मूर्ति में शक्ति है या साधक के विश्वास में? ज्योतिषी रत्न-अंगूठी देकर कहते हैं, आपका कार्य होगा, अवश्य होगा। कार्य होता भी है परन्तु कैसे? क्योंकि उस व्यक्ति को विश्वास हो जाता है, मेरा कार्य होगा। अब अंगूठी में शक्ति है या व्यक्ति के विश्वास में?

भगवान में विश्वास

कई लोग कहते हैं, हम भगवान को क्यों मानें? इससे हमें क्या फायदा होगा? हम इसलिए मानें क्योंकि इससे हमारी भावनायें सुन्दर होंगी, अनुभूतियाँ आनंदमय बनेंगी,

हमारे विचार सकारात्मक व जीवन सहज बनेगा, हमारा मन बुराइयाँ छोड़ देगा व जीवन में सुख-शान्ति का अहसास बढ़ेगा। आजकल तो वैज्ञानिक भी मानते हैं कि नकारात्मकता को आध्यात्मिकता से मिटा सकते हैं तथा एक रिसर्च के मुताबिक नास्तिक लोग, आस्तिक लोगों की तुलना में अधिक बीमार पड़ते हैं। भगवान पर विश्वास हमें स्वास्थ्य, खुशी, आनंद सब कुछ प्राप्त कराता है।

स्वयं में विश्वास

हमें स्वयं पर भी विश्वास रखना चाहिए, हम जो हैं, जैसे हैं, अच्छे हैं। 'सर्वशक्तिमान परमात्मा की संतान हूँ', यह निश्चय रखकर कोई भी कार्य करेंगे तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी। जो व्यक्ति स्वयं पर भरोसा नहीं रखता, वह हमेशा सोचता है, पता नहीं मुझसे होगा या नहीं, मैं कर पाऊँगा या नहीं। ऐसा व्यक्ति जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकता इसलिए यह संशय रूपी कीड़ा निकालकर स्वयं पर विश्वास करो। संशय का कीड़ा विश्वास को खा जाता है। स्वाभिमान व विश्वास से भरा व्यक्ति सब पर अपना प्रभाव छोड़ता जाता है। संबंधों में भी यदि हम एक-दूसरे पर विश्वास रखते हैं तो रिश्ते मधुर, पारदर्शी एवं सुन्दर बनते जाते हैं। आजकल संबंधों की कटुता एवं उनके बिखरने का कारण भी एक-दूसरे पर विश्वास की कमी है। अत: स्वयं का स्वमान जगायें व स्वयं को विश्वास से भर दें। ❖

संविधान...पृष्ठ 25 का शेष..

अगले लेख में मैं अन्य देशों के संविधान के बारे में बात करूँगा। जब मैं कानून की पढ़ाई पढ़ रहा था, मैंने अन्य 7-8 देशों के संविधान के बारे में पढ़ा था। अलग-अलग देशों में लोकतंत्र किस प्रकार कार्य करता है उसके बारे में तथा भारत के संविधान के बारे में एवं प्यारे शिवबाबा का दैवी संविधान किस प्रकार कार्य करता है, उसके बारे में अगले लेख में चर्चा करेंगे। अगले लेख से मैं संविधान शब्द की बजाय Constitution शब्द लिखूंगा क्योंकि बहुत से अंग्रेजी शब्द हिन्दी भाषा में ऐसे समाहित हुए हैं कि उसके लिए खास हिन्दी शब्द प्रयोग में लाया जाये तो वह समझना भी मुश्किल होता है जैसे कि रेलवे यह अंग्रेजी शब्द है परंतु उसका हिन्दी शब्द लोहपट्टिका कोई भी प्रयोग में नहीं लाता है। ऐसे ही अभी मैं Constitution शब्द को उपयोग में लाऊंगा। ❖

दिनचर्या होगी सर्वश्रेष्ठ

ब्रह्माकुमार सुधीर, चन्डीगढ़

उच्च कोटि के राजयोगी की दिनचर्या प्रात: 4 बजे से पहले शुरू होती है। यह समय भारत वर्ष में अमृतवेला कहलाता है। इसी समय भक्त मन्दिर, गुरुद्वारे, मस्जिद आदि में पूजा, प्रार्थना करते हैं। इस वक्त आत्मिक स्वरूप में स्थित हो ईश्वरीय याद में बैठने से विशेष वरदान प्राप्त होते हैं और आत्मा की शक्तियां बढ़ती जाती हैं। श्रेष्ठ राजयोगी, नाश्ता हो या दिन का भोजन प्रभु प्रसाद समझ मधुर ईश्वरीय स्मृति में स्वीकार करेगा। दिन भर में, कार्य व्यवहार में आते अपने कर्मों पर विशेष ध्यान देते हुए निरंतर सत्कर्म जमा करेगा। पाप कर्म या विकर्म की तो बात छोड़िये, साधारण कर्म भी नहीं करेगा। उसके प्रत्येक कर्म में विशेषता जरूर होगी, जो देखने वालों के दिल से निकलेगा कि यह कुछ अलग है। महात्मा गांधी जी प्रतिदिन सवेरे दिन भर के कार्यों की सूची निकालते थे और रात्रि सोने से पूर्व जांच करते थे कि कोई कार्य अपूर्ण तो नहीं रहा। अच्छे व्यापारी लोग भी रात को सोने से पहले सारे दिन का पोतामेल (घाटा या फायदा) निकालते हैं कि आज कितना लाभ या नुकसान प्राप्त हुआ। ऐसे ही श्रेष्ठ राजयोगी रात्रि विश्राम से पूर्व निरीक्षण करेगा कि विश्व कल्याण हित में क्या-क्या शुभ कार्य किये? पूर्व निर्धारित कार्य पूर्ण हुए या नहीं? यदि ईश्वरीय विस्मृति-वश कोई गलत कर्म हुआ है तो क्षमाप्रार्थी बन अपनी गलती को स्वीकार कर भविष्य में उस पर विशेष ध्यान रखते हुए इसे परीक्षा के रूप में देखेगा और उत्तीर्ण होकर दिखायेगा। ❖

हृदयाघात बना वरदान परमात्म मिलन के लिए

ब्रह्माकुमार उदयराम, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

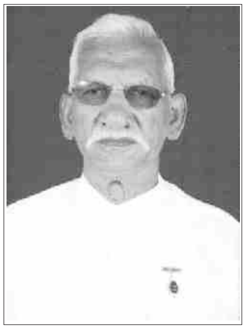

बात 4 अगस्त, 2001 की है, मैं सुबह 4 बजे अपने पशुओं की देखभाल करने उठा, अचानक छाती में असहनीय दर्द हुआ और अचेत होकर गिर गया। इस प्रकार के दर्द से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ था। परिवार वालों ने उसी समय जसवन्त राय हार्ट केयर सेन्टर, मेरठ में भर्ती कर दिया। सायं 7 बजे जब होश आया तो अपने को हॉस्पिटल के आई.सी.यू.कक्ष में पाया। डॉ.वी.के.बिन्द्रा, डॉ.राजीव अग्रवाल ने मेरी एंजियो कार्डियोग्राफी और कलर डुपलर की रिपोर्ट से बताया कि आपको हार्टअटैक आया है, हम जितना कर सकते थे, कर दिया और सुझाव दिया कि अब आप जितना शीघ्र हो सके, गोविन्द वल्लभ पंत हॉस्पिटल, दिल्ली चले जाओ, फिर मेरा केस जी.वी.पंत हॉस्पिटल को रैफर कर दिया गया। इन 7-8 दिनों में शरीर इतना दुर्बल हो गया था कि अपने आप हिल भी नहीं सकता था।

शीघ्र बाईपास सर्जरी की सलाह

गोविन्द वल्लभ पंत हॉस्पिटल, दिल्ली में 28 अगस्त, 2001 को रात्रि 11 बजे एंजियोग्राफी कर दी गयी। उसकी रिपोर्ट से पता चला कि LAD Med-100% और RCA-99% बन्द है। प्रभारी चिकित्सक ने शीघ्रातिशीघ्र बाईपास सर्जरी कराने के लिए कहा। सर्जरी के लिए 29 अगस्त, 2001 को सायं 5 बजे का समय दिया गया। उसी दिन घोषणा हुई कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, आबू पर्वत से डॉक्टर आये हैं जो हॉस्पिटल के योग-केन्द्र कमरा नं. 507 में 11.30 बजे बतायेंगे कि राजयोग के द्वारा बीमारियाँ कैसे ठीक की जा सकती हैं खासकर हृदय रोग और डिप्रेशन आदि। मैं भी वहाँ जाकर बैठ गया। डॉ.एस.के.गुप्ता काफी समय तक मरीजों से बात करते रहे। आखिर में मुझे भी अपने पास बुलाकर कागज देखकर बोले, आपकी तो आज बाईपास सर्जरी होनी है। मैंने कहा, जी हाँ। डॉ.गुप्ता ने बताया, मेडिकल साइन्स के पास हृदयाघात का कोई पक्का इलाज तो है नहीं, हो सकता है, 4-6 मास के बाद बाईपास सर्जरी भी नाकाम हो जाए। आपको परम सर्जन अर्थात् परमात्मा शिव बाबा ने ही मेरे पास भेजा है।

जीने की यथार्थ प्रणाली सिखाई

डॉ.गुप्ता ने जैसे ही अपने नयनों से मेरी ओर निहारा (दृष्टि दी) तो अनुभव हुआ जैसे एक अलौकिक शक्ति अन्दर प्रवाहित हो रही है। मैंने उसी दिन अपना नाम सहज राजयोग के लिए रजिस्टर कर दिया, बगैर बाईपास सर्जरी कराये जी.वी.पंत हॉस्पिटल से छुट्टी ले ली और मई, 2002 में शान्तिवन (आबू रोड) में आयोजित CAD (Coronary Artery Disease) रिग्रेशन बेसिक कोर्स में युगल के साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ हमें यथार्थ जीने की प्रणाली सिखाई गयी जिसका प्रमुख आधार है सहज राजयोग का अभ्यास, कम वसा व हाई पावर वाला शाकाहारी भोजन तथा एरोबिक व्यायाम। वहाँ भोजन, व्यायाम, आराम का पूर्ण ध्यान रखा गया। साथ-साथ आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक ज्ञान तथा आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र के ज्ञान को मिलाकर की गई नई शोध की जानकारी दी गई जिससे पता चला कि मन के विचारों का सकारात्मक परिवर्तन करने से किस प्रकार पुनः स्वस्थ, सुखी व खुशहाल हो सकते हैं।

खुल गई कोरोनरी आर्टरीज

राजयोग के प्रयोग से मेरी दोनों कोरोनरी आर्टरीज LAD व RCA खुली हैं जिसका 29-11-2002 की

एंजियोग्राफी रिपोर्ट से पता चला, जिससे पंत हॉस्पिटल के डॉक्टर आश्चर्यचकित रह गये कि राजयोग से कैसे कोरोनरी आर्टरी खुल गईं, यह तो मेडिकल साइन्स में भी असम्भव है। राजयोग के अभ्यास तथा शिव बाबा के वरदानों से मैं और मेरा पूरा लौकिक परिवार, सुख-शान्तिपूर्वक जीने का अनुभव कर रहे हैं। पिछले दो वर्षों से कोई भी दवाई नहीं ली। जब से सुप्रीम सर्जन के बने, प्रकृति (शरीर) में किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव नहीं हुआ।

विश्व की सर्व मनुष्यात्माओं को शुभ सन्देश देना चाहता हूँ कि परम कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव इस कलियुगी तमोप्रधान सृष्टि पर आये हुए हैं पुनः राजयोग सिखाने, आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने और मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देने। मेरी शुभकामना है कि शिव बाबा की सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा अपने श्रेष्ठ संस्कारों, दिव्यगुणों और आत्मिक शक्तियों को धारण कर पुनः स्वर्णिम सृष्टि की स्थापना के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बन राजभाग्य प्राप्ति के अधिकारी बनें। यह आत्मा-परमात्मा के मिलन का कल्याणकारी संगमयुग है।

अन्नामलाई विश्वविद्यालय

के तकनीकी सहयोग से संचालित पाठ्यक्रम

ब्रह्माकुमारीज़, शिक्षा प्रभाग (R.E.R.F)

मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म

डिप्लोमा	बी.एससी.	स्नातकोत्तर डिप्लोमा	एम.एससी.	पी.जी. डिप्लोमा इन काउण्सिलिंग	Self Management & Crisis Management एम.बी.ए.
हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / गुजराती	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / मराठी / गुजराती / नेपाली	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / गुजराती / तेलगू / मराठी	अंग्रेजी	अंग्रेजी
+ 2 अथवा समकक्ष	+ 2 अथवा समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष
एक वर्ष	तीन वर्ष	एक वर्ष	दो वर्ष	एक वर्ष	दो वर्ष

पाठ्यक्रम **नियमावली और आवेदन फार्म** ब्रह्माकुमारीज़ के किसी भी पी.सी.पी. केन्द्र अथवा शान्तिवन स्थित निदेशक कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। (1) फार्म शुल्क - 100 रू. (एम.बी.ए. के लिए 250 रू.) (2) पोस्ट के द्वारा 150 रू. फार्म प्राप्त करने के लिए 094422-68660 पर सम्पर्क करें। **वार्षिक परीक्षा प्रत्येक वर्ष 19 मई से प्रारम्भ होगी।**

AU Nodal Office

ब्रह्माकुमारीज़, विश्व शान्ति भवन
36, मिनाक्षी नगर, P&T नगर के पीछे
मदुराई - 625 017 (तमिलनाडु)
09442268660/09414153090

प्रवेश प्रारम्भः प्रवेश की अंतिम तिथि 30 नवम्बर, 2016

Email:valueeducationmadurai@gmail.com
Website: www.bkvalueeducation.in

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

एक अद्भुत उड़ान

ब्र.कु. मनोज सिंघल, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन

एक सुखद अहसास, एक सुखद मंजिल। एक स्थान से एक साथ कई पंछी बड़ी तीव्रगति से उड़ान भरने की तैयारी में थे। बस, उनको कमाण्डर से आदेश मिलने की देरी थी। फिर क्या था, कमाण्डर ने उन सभी पंछियों का बड़े ही सुन्दर ढंग से अभिवादन, अभिनन्दन किया और सभी पंछी एक साथ पूरे वेग से अपना स्थान छोड़ते हुए नीले आकाश की ऊँचाइयों तक पहुँचे जा रहे थे। धरती की चमक, आकर्षण से दूर होते नजर आ रहे थे। उन सभी पंछियों को एक गन्तव्य स्थान तक पहुँचना था। कुछ पंछी बिना किसी को देखे गन्तव्य पर पहुँचने में सफल हो रहे थे, कुछ कभी अपनी रफ्तार को देखते तो कभी दूसरे उड़ते हुए पंछियों को। इस कारण उनकी उड़ान कभी तेज तो कभी मन्द पड़ रही थी। कुछ पंछी उड़ते-उड़ते न जाने किस मजबूरी के कारण अचानक ही धरती पर वापिस उतर रहे थे जबकि वे नहीं चाहते थे कि वे मंज़िल को छोड़ धरती के दायरे में उतरें परन्तु वे तीव्रगति से नीचे उतरते ही जा रहे थे! उतरते ही जा रहे थे!!

उतरने वाले पंछी पूरे वेग के साथ उतरते जा रहे थे। अब उनका उतरना थम चुका था क्योंकि अब वे पूर्ण रूप से धरती की पकड़ में थे। वे उड़ने का भरसक प्रयास कर रहे थे लेकिन अपने को कमजोर महसूस कर रहे थे। उनको धरती की पकड़ में काफी पीड़ा महसूस हो रही थी। वे उड़ने की कोशिश करते लेकिन गिर जाते, बार-बार का प्रयास, बार-बार गिरना, बार-बार का संभलना उनको बड़ा हैरान कर रहा था। अचानक ही उनके आजू-बाजू में एक मीठी मधुर आवाज गूंजने लगी..... ''आप तो होलीहंस हो, आप तो सदा ही उड़ने वाले स्वतंत्र पंछी हो। उड़ते रहो, उड़ते रहो, उड़ते रहो। आपको कोई बाँध नहीं सकता। आपको किसी ने नहीं बाँध रखा है। आप मुक्त हो। अपनी मंज़िल तय करो, आप पूरे वेग के साथ उड़ो। अगर अभी पूरे वेग के साथ नहीं उड़े तो मंजिल पर कभी नहीं पहुँच सकोगे। फिर से शैतान के चंगुल में फँस जाओगे और मारे जाओगे। इसलिए पूरे वेग से उड़ो। मैं कह रहा हूँ कि उड़ो, आपको कोई बाँधने वाला नहीं है, यह आपके मन का भ्रम है कि आपको किसी ने बाँध रखा है अथवा आप किसी बंधन में हैं।'' यह आवाज उनके आस-पास सूक्ष्म रूप से गूँज रही थी।

इस मधुर ध्वनि की तरंगें उनके अन्तर्मन को बार-बार छू रही थीं, अचानक ही उनके अन्दर एक करण्ट-सा आया और वे अब धीरे-धीरे धरती से उड़ने का प्रयास करते-करते, देखते ही देखते नीले आकाश की ऊँचाइयों में ओझल हो गये। एक आश्चर्यवत् घटना हुई कि उनसे पहले उड़ने वाले पंछी अब उनसे काफी पीछे रह चुके थे और वे अपनी इस अद्भुत उड़ान पर बड़े ही आनन्दित हो रहे थे और झूमते-झूमते अपनी मंज़िल पर पहुँचने का इंतजार कर रहे थे, उनकी इस उड़ान में बीच-बीच में फिर वही ध्वनि सुनाई पड़ रही थी, ''आओ, मेरे नयनों के नूरे रत्नो, आओ, आपका बहुत-बहुत स्वागत है, स्वागत है।'' आश्चर्य, महान आश्चर्य! कैसी अद्भुत उड़ान! कैसा अद्भुत सफरनामा!

आप समझ चुके होंगे कि इस अद्भुत उड़ान के पीछे क्या रहस्य छिपा है। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग में परमपिता परमात्मा शिव बाबा ने हम आत्म-पंछियों को एक लक्ष्य दिया है, वह है, शिव बाबा के स्वभाव, गुण, कर्त्तव्य में अपने को समान बनाना। यही हमारे पुरुषार्थ की सम्पूर्ण मंजिल है। हम आत्म-पंछी उसी मंजिल की ओर रोज-रोज पूरे वेग से उड़ान भर रहे हैं। कई आत्म-पंछी तो शिव बाबा समान बन चुके हैं, कुछ आत्म-पंछियों में थोड़ी-सी कसर

अभी भी बाकी रही हुई है, कुछ अधिक वेग से उड़ान पर हैं, मंजिल को प्राप्त करने की आशाएँ उनके दिल में समाई पड़ी हैं। लगता है, वे भी जल्दी ही अपनी मंजिल को प्राप्त कर जायेंगे। कुछ पंछी अभी भी देह, देह के पदार्थ, रसनाएँ, देह के संकल्प, स्वभाव, संस्कार की धरनी को पकड़े हुए हैं। वे इन सबको छोड़ने का पूरा प्रयास कर रहे हैं, बहुत कुछ छोड़ पाने में सफल भी हो चुके हैं लेकिन अभी भी कुछ बाकी रह गया है। उसके छूटने की कशमकश चल रही है। वे सोचते हैं कि हमको धरती ने पकड़ रखा है, वे उड़ना भी चाह रहे हैं लेकिन धरती के आकर्षण को छोड़ना नहीं चाह रहे हैं। उन आत्म-पंछियों को वही मधुर-मधुर धुन सुनाई देती है – ''मेरे मीठे बच्चो, आओ, जल्दी-जल्दी उड़कर मेरे पास आ जाओ।'' आह्वान का यह गीत ब्रह्मा बाप वतन में बैठे-बैठे गा रहे हैं। शिव बाबा कह रहे हैं कि बच्चे, छोड़ो तो छूटो, छोड़ो तो छूटो।

इस आवाज को कुछ आत्म-पंछियों ने बार-बार सुना तो छोड़ दिया धरती की खिंचावट को और अपने मन-बुद्धि से मंजिल की ओर उड़ चले। शरीर में होते हुए भी विदेही स्थिति द्वारा सूक्ष्म लोक, ब्रह्मलोक की उड़ान भर रहे हैं। इसी उड़ान में उनकी मंजिल समाई पड़ी है। ऐसा उनका अपना निश्चय व विश्वास कहता है।

तो आओ आप और हम सभी मिलकर अब उड़ चलें, समय कह रहा है, प्रकृति कह रही है, भक्त आत्माएँ कह रही हैं, प्रकृतिपति शिव बाबा भी कह रहे हैं – ''बच्चे, अब तो अपने को सर्व बंधनों से मुक्त करो और मेरी पलकों पर बैठ उड़ चलो। यह समय तीव्र वेग से उड़ने का है, चलने का समय गया, जम्प लगाने का भी समय गया, अब तो तीव्र गति से उड़ने का समय है, तभी मंजिल पर पहुँच पायेंगे।'' हमसे आगे बहुत आत्म-पंछी निकल चुके हैं, अब जल्दी ही समापन होने वाला है। ऐसी घड़ी में हम कहीं अटके, लटके, भटके हुए तो नहीं हैं? नहीं, नहीं। हिम्मत मत हारो, स्वयं प्रकृतिपति मालिक आपके साथ हैं, वे स्वयं कह रहे हैं कि जब मैंने आप सबको अपनी संतान के रूप में स्वीकार किया है तो जो भी हो, जैसे भी हो, आप मेरे हो, मैं करोड़ों भुजाओं वाला सदैव आपके साथ हूँ, आप हिम्मत मत हारो। आप फिकर किस बात की करते हो? बाबा कहते हैं, ''बच्चे, घबराओ नहीं, अपने को सर्व बंधनों से मुक्त करो और अन्य आत्माओं को भी मुक्त होने में सहयोग करो।'' अब यह रेस भी समाप्ति के कगार पर है, कहीं ऐसा न हो कि सभी आगे चले जाएँ और हम पीछे रह जाएँ।

वर्तमान समय बाबा की मुरलियाँ बहुत शॉर्ट और राज़ों भरी चल रही हैं जिनको गहराई से समझने की बहुत ही आवश्यकता है। वर्तमान समय बाबा से मिलन के समय जब कई बार बाबा एक ही शब्द को बार-बार अण्डरलाइन करते हैं तो कई समझते हैं कि बाबा, एक ही बात को बार-बार रिपीट कर रहे हैं। नहीं, ऐसा नहीं है। बाबा एक ही बात को रिपीट नहीं कर रहे हैं बल्कि अभ्यास करा रहे हैं, हमारे ध्यान पर ला रहे हैं और कह रहे हैं कि बच्चे, आपके दिल में कौन? मेरे दिल में तो आप भाग्यशाली बच्चे हो, जिन्होंने मुझ साधारण रूप में आये हुए परमात्मा पिता को पहचान लिया।

लेकिन अभी हम अपने दिल को चेक करें कि वहाँ कौन? स्थूल बातें, व्यर्थ की कचरा-पट्टी की बातें, इधर-उधर के व्यर्थ समाचारों के लेन-देन की बातें, तेरी-मेरी की बातें, स्थूल सम्पत्ति के लेन-देन की बातें, मोबाइल-कम्प्यूटर-इण्टरनेट में व्यर्थ अपने को उलझाये रखने की बातें। और भी बहुत सारी बातें हैं जिनके कारण पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मणों का समय व्यर्थ जा रहा है, ऐसे ही व्यर्थ जाने वाले समय को बचाने की आवश्यकता है।

हम चेक करें – आज वो खुमारी कहाँ गई? जब हम शुरू-शुरू में ज्ञान में आये थे और घण्टों-घण्टों बैठ योगाभ्यास किया करते थे, वो नशा, वो न्यारापन, प्रभु के प्रेम में डूबे हुए वो नैन-चैन, वो एकान्त और एकाग्रता का अभ्यास, वो देह से अलग होने का अभ्यास, वो त्याग-तपस्या

की लहर, अतीन्द्रिय सुख-चैन की बंसी आज कहाँ गुम हो गई?

इस सहूलियत भरी दुनिया में अपने को सहूलियतों से इतना भर दिया है कि कहीं भी सहन करने की, त्याग करने की, परेशानी को झेलने की जैसे कि आदत ही खत्म हो गई है। जरा-सी भी परेशानी हुई नहीं कि आत्मा का चिल्लाना-चीखना चालू, सब्र का बाँध जैसे कि टूट गया हो, अन्दर की सूक्ष्म स्थिति का क्या हाल होता है, हम सभी अच्छी तरह से परिचित हैं। फिर आने वाले भयानक समय का सामना कैसे कर सकेंगे? क्या ऐसा सम्भव नहीं हो सकता कि सप्ताह में एक दिन के लिए ही सही, टोटल कम्प्यूटर, इण्टरनेट, मोबाइल बन्द रखे जा सकें और उस दिन प्यारे प्रभु की दिव्य स्मृतियों में अपने को डुबो सकें, और ये भी सम्भव न हो तो कम से कम सप्ताह में एक दिन कम्प्यूटर और इण्टरनेट तो बंद रख ही सकते हैं, क्या विचार है आपका इस संदर्भ में!!!

दिल में एक दिलाराम शिव बाबा की मधुर स्मृति की बजाय जब इस प्रकार की व्यर्थ स्मृतियाँ होंगी तो आत्मा की गति क्या होगी? अन्त-मते-सो-गते अर्थात्.......!!!

अभी अपने को एकान्त और एकाग्रता की बहुत ही आवश्यकता है, बाह्यमुखता से अन्तर्मुखता की बहुत आवश्यकता है, अपने विचारों को नया मोड़, सकारात्मक मोड़ देने की आवश्यकता है, सहनशक्ति को बढ़ाने की आवश्यकता है, एक सकारात्मक, शक्तिशाली संकल्प में अपने को लम्बे समय तक टिकाने की आवश्यकता है जिसके लिए कुछ समय निकालना आवश्यक है, जिसके द्वारा हम आत्म-अन्वेषण कर सकें और उस महान लक्ष्य, महान मंजिल को प्राप्त करें जिसके लिए शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा हम सभी ब्राह्मण कुलभूषणों पर वर्षों से मेहनत कर रहे हैं अन्यथा वो सपना, सपना ही रह जायेगा। फिर शायद दिल से यही निकलेगा कि दिल के अरमाँ, आँसुओं में बह गये, इस दिल के टुकड़े हजार हुए, एक कहीं गिरा तो दूसरा कहीं गिरा। फिर तो शायद दिन और रात अंधेरे के समान ही लगेंगे और दिल छटपटायेगा कि अभी उजाला क्यों नहीं हो रहा है!!! शायद अपनी छाती भी पीट कर रोना पड़े। ❖

श्रेष्ठ संस्कारों का महत्त्व

ब्रह्माकुमारी दुर्गेश, आनंदपुरी, हाथरस (उ.प्र.)

एक बार एक लेखक के पास एक व्यक्ति आया और पूछा, आप सुसंस्कारों को इतना महत्व क्यों देते हो? लेखक ने उस व्यक्ति को लोहे का एक टुकड़ा दिखाते हुए पूछा, इसका मूल्य कितना होगा? व्यक्ति ने कहा, होगा एक रुपया। लेखक ने उस लोहे के टुकड़े को ठोंक-पीटकर एक पत्ती बनाया और फिर पूछा, अब इसकी कीमत क्या होगी? दस रुपये, व्यक्ति ने कहा। लेखक ने उस लोहे से सुन्दर कलाकृति बनाकर फिर उस व्यक्ति से पूछा, अब इसकी कीमत बताइये? व्यक्ति ने कीमत 100 रुपये बताई।

लेखक ने कहा, लोहे के टुकड़े की कीमत एक रुपये से 100 रुपये तक पहुँच गई, कैसे? उसकी गुणवत्ता बढ़ने से। इसी तरह अगर हमारा जीवन बचपन से ही सदाचार से, सत्यता से, स्नेहयुक्त व्यवहार से, निरहंकारीपन, निर्विकारीपन से सुसंस्कारित किया जाये तो क्या हम महान नहीं बन सकते? हमें जीवन को श्रेष्ठ संस्कारों से शृंगारना है, न कि शारीरिक आभूषणों से। हमारे असली गहने हैं धैर्य, नम्रता, मधुरता, दिव्यता, पवित्रता, रमणीकता, स्वच्छता, सदाचार आदि। आत्मा जितनी इन गहनों से सजी हुई होगी उतनी रूहानियत होगी, आत्मा में तेज आता जायेगा। लेखक की बात सुनकर उस व्यक्ति को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। शिव बाबा भी कहते हैं, **'बच्चे, तुम अपने आपको अविनाशी आत्मा समझकर यदि मुझ अनादि-अविनाशी परमपिता से प्यार करोगे तो आत्मा सुसंस्कारित और जीवन महान बन जायेगा।'**

संविधान (Constitution)

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

संविधान (Constitution) के विविध रूप होते हैं। ये सभी रूप जरूरत के अनुसार काम में आते हैं अर्थात् इनके निर्माण में 'आवश्यकता (Necessity)' शब्द जरूरी है। जैसे एक व्यक्ति द्वारा भी संविधान बनाया जाता है जिसे कानून की भाषा में Trust Deed कहते हैं। Trust Deed में संविधान के कारोबार जैसी सब बातें होती हैं परंतु उसका नाम Trust Deed होता है। Trust Deed को बनाने वाला व्यक्ति बाद में सब ट्रस्टियों के साथ मिलकर कारोबार करता है। उदाहरण के लिए, प्यारे बाबा ने वर्ल्ड रिन्युवल स्प्रिचुअल ट्रस्ट बनाया, वह एक व्यक्ति के आधार पर बनाया। ऐसे ही ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर तथा त्रिमूर्ति शिव रिलिजियस एण्ड चैरिटेबल ट्रस्ट आदि भी एक व्यक्ति के आधार पर ही बने हुए हैं। परंतु Trust एक व्यक्ति नहीं है, Trust का सारा कारोबार Trust Deed के आधार पर होता है और उसके Trustees Trust Deed के अनुसार कार्य करते हैं।

कई जगहों पर लोग संविधान को तोड़-मरोड़कर अपनी बात रखते हैं जैसे 1975 में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इमरजेन्सी लगाई थी। कई जगहों पर संविधान होते हुए भी उस जगह के राष्ट्र प्रमुख संविधान के अनुसार कारोबार नहीं करते हैं जैसे रशिया में संविधान होते हुए भी स्टालिन ने अपनी विचारधारा के आधार पर कारोबार चलाया। एक हंसी की बात है कि एक बार भारत में रशिया के बुलगेरिन आये थे तो एक पत्रकार ने कुछ अलग-सा सवाल उनसे पूछ लिया। उन्होंने पूछा कि यह प्रश्न किसने पूछा? सारे पत्रकार चुप हो गये। भारत में स्टालिन का राज्य नहीं चलता था तो भी उन्होंने उसी प्रकार से भारत में व्यवहार किया। रशिया में जब स्टालिन थे तब संविधान होते हुए भी वे अपनी साम्यवादी (Communist) विचारधारा के अनुसार राज्यकारोबार चलाते थे परंतु बाद में स्टालिन के जाने के बाद भी उसी प्रकार से कारोबार चलता रहा। मैं और उषा जी जब रशिया गये थे तब वहां के प्रधानमंत्री पुतिन ने सरकारी नौकरों को अपने भाषण में कहा था कि रशिया अभी साम्यवादी (Communist) नहीं परंतु पूंजीवादी (Capitalist) बन गया है। संविधान के अनुसार प्रजा मुख्य होती है। राज्य कारोबार करने वालों को प्रजा की बात माननी होती है और प्रजा की बात के अनुसार कार्य करना होता है। संविधान के अनुसार रशिया में पूंजीवाद (Capitalism) स्थापित हुआ परंतु अभी भी वहां पर शिकायत आती है कि वहां का कारोबार साम्यवादी तरीके से होता है। सरकारी नौकर साम्यवादी की तरह से ही कार्य करते हैं।

संविधान शब्द को ज्यादा समझना हो तो Ultra-Vires (beyond the powers) तथा Intra-Vires (within the powers) बातों को समझना होगा। उदाहरण के लिए अगर यज्ञ किसी भी गीता पाठशाला को जमीन खरीदने की स्वीकृति देगा तो वह यज्ञ के लिए Ultra-Vires होगा अर्थात् मैनेजमेंट कमेटी नहीं कर सकेगी। इस प्रकार जो भी कार्यकर्त्ता होते हैं, उन्हें संविधान की मर्यादा में काम करना पड़ता है, मर्यादा के बाहर की बातें कोर्ट स्वीकार नहीं करती। भारत में United Motors V/s Union of India का बहुत प्रसिद्ध केस हुआ है। इस केस में संविधान पर बहुत चर्चा हुई तो सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि भारत सरकार, संविधान के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकती। ऐसे ही भागलपुर की जेल में बंद एक कैदी ने लिखा था कि मेरे साथ इतनी मारपीट हुई कि मेरी एक आँख खराब हो गई। इस केस में भी संविधान के अनुसार कार्य हुआ और जस्टिस वी.आर. कृष्णा अय्यर ने उस कैदी की बात को मान लिया और भागलपुर

के जेलर के विरुद्ध आदेश (Order) पास हुआ। मुगल काल में भी बादशाह जहांगीर ने अपने महल के बाहर एक घंटा लगाया था। प्रजा में जिसको भी कुछ समस्या होती थी तो वह आकर घंटे की रस्सी खींचते थे और फिर उसके बारे में सुनवाई होती थी। एक बार ऐसे ही बादशाह जहांगीर के दरबार में एक घोड़ा घास खाते-खाते आया और उसने वह रस्सी खींच ली। जैसे ही घोड़े ने रस्सी खींची वैसे ही वह शिकायत का घंटा बजा। उसके बाद बादशाह ने मामले की पूरी जानकारी ली और घोड़े को न्याय दिलाया। इस प्रकार संविधान एक ऐसी चीज है जिसमें न केवल मनुष्य परंतु प्राणियों को भी न्याय मिलता है।

कुछ लोग आपस में मिलकर एक सोसायटी बनाते हैं। चाहे Consumer Society हो, Credit Co-operative Society हो या Housing Society हो, इन सबका Co-operative Societies Act 1912 के अंतर्गत रजिस्ट्रेशन होता है तथा कम से कम 10 मेम्बर्स होते हैं। मुम्बई जैसे बड़े शहर में हर किसी को अपने मालिकाना हक (Ownership) की जमीन खरीदकर मकान बनाना संभव नहीं है इसलिए वहां के लोग मिलकर Housing Society बनाते हैं जिसमें सदस्यों के फ्लैट बनते हैं। अपनी संस्था में भी ब्रह्मा कुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी, राजयोगा एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन तथा रेडियो मधुबन कम्युनिकेशन सोसायटी बनी हुई है जो Societies Registration Act 1860 के अंतर्गत रजिस्टर्ड हैं जिनमें काम करने वाले कम से कम 7 सदस्य हैं। इन सभी संस्थाओं के संविधान के बारे में हम आगे चलकर विचार करेंगे।

कई संविधान, सरकार के बने हुए कानूनों के आधार पर या सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों के आधार पर भी बनते हैं। उदाहरण के लिए, जैसे इंग्लैण्ड का संविधान किताब के रूप में नहीं है। अलग-अलग समय पर संविधान में बदलाव आते गये। इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ लॉर्ड्स (House of Lords) ने समय-समय पर जो निर्णय दिये, उस अनुसार वहाँ का संविधान बना हुआ है। इंग्लैण्ड का संविधान एकमात्र अलिखित संविधान (Unwritten Constitution) है। अन्य देशों में कोर्ट जो भी निर्णय लेती है, वह संविधान बनता है।

इंग्लैण्ड की हाउस ऑफ लॉर्ड्स में एक बहुत प्रसिद्ध निर्णय लिया गया जिसके परिणाम ने सारी दुनिया को प्रभावित किया। बात ऐसी है कि एक सुखी परिवार था, पति कमाई करता था, पत्नी घर और बच्चों को संभालती थी। पति ने डायवोर्स का केस किया। इंग्लैण्ड की सुप्रीम कोर्ट ने नक्की किया कि पत्नी ने कमाई नहीं की, घर संभाला, बच्चों को संभाला इसलिए डायवोर्स के समय पति की मिलकियत का आधा हिस्सा पत्नी को मिलेगा। इस कारण पत्नी को 45000 पौंड प्राप्त हुए। इसी बात के कारण दुनिया के बड़े-बड़े लोग शादी करने के बदले Live-in-relationship का करार करते हैं जिसके परिणामस्वरूप जब करार का विच्छेद होता है तो पति की मिलकियत पति की ही रहती है और पत्नी की मिलकियत पत्नी की ही रहती है। इस निर्णय के कारण मैं जानता हूँ, जर्मनी में ईश्वरीय ज्ञान में चलने वाला एक युगल Live-in-relationship में रहता है।

संविधान छोटा भी होता है तो बड़ा भी होता है। भारत का संविधान सबसे लम्बा है जिसमें 448 articles, 25 parts, 12 Schedules, 5 appendices एवं 100 amendments (संशोधन) हैं और मोनाको (Monaco) देश का संविधान सबसे छोटा है जिसमें 9 Chapter, 97 articles हैं और सब मिलकर कुल 3814 शब्द हैं। संविधान अर्थात् Constitution शब्द का निर्माण फ्रेन्च भाषा में हुआ और फ्रेन्च में यह शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'Constituo' के द्वारा आया। फ्रांस की सरकार ने फ्रान्स के बने हुए कानून अर्थात् सरकार के आदेश (Order) आदि अपने संविधान में रखे हैं। फ्रांस का संविधान 2-3 बार बना और बदला है।

कैथोलिक चर्च के पोप ने भी Constitution शब्द

को अपनाया है। पोप के द्वारा जो भी कानून बनता है या आदेश (order) होते हैं उन सबको 'Apostolic Constitution' के रूप में जाना जाता है। संविधान के लिए भारत में कहा गया है कि रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाये पर वचन न जाये। ऐसे ही पश्चिमी दुनिया में भी राज्यकारोबार के लिए कुछ न कुछ नियम बने हुए हैं। ग्रीस के नगर मंत्रियों ने तय किया कि सुकरात एथेन्स की जनता को मूर्ख बनाता है जिससे आगे चलकर अनेक नकारात्मक बातें फैलेंगी इसलिए सुकरात को जहर का प्याला पिलाया गया। इससे सिद्ध होता है कि उस समय भी ग्रीस में संविधान था। ऐसे ही ईसा मसीह को भी सूली पर लटकाने के लिए एक कमेटी बनी उसमें भी जजेज थे। उन्होंने ही तय किया था कि उनको सूली पर लटकाया जाये। जिस दिन ईशू को सज़ा होने वाली थी उससे पहले वाली रात को ईशू ने अपने सभी शिष्यों के साथ भोजन किया और सेन्ट पीटर्स को अपने अंतिम वारिस के रूप में नियुक्त किया।

सेन्ट पीटर्स धर्म का प्रचार करने रोम शहर में पहुँचा। वहां के बादशाह ने उसे पकड़ा और फाँसी की सजा दी। वहां से वह भागकर जेरुशलम आया। ईसामसीह ने सेन्ट पीटर्स को दर्शन दिये और कहा कि तुम वहां से भागकर क्यों आये? वापिस रोम जाओ और जहां पर तुम्हें यह सज़ा दी जायेगी वही स्थान आगे चलकर ईसाई धर्म का बड़ा स्थान बनेगा। जिस स्थान पर उसे फाँसी की सज़ा दी गई वह स्थान आज St. Peter's Basilica के रूप में प्रसिद्ध है।

सुकरात के समय में सरकार का कानून बहुत सख्त था। सरकार ने सुकरात को उसके सिद्धान्तों के कारण सज़ा सुनाई। तब सुकरात के साथियों ने उससे कहा कि तुम्हें सज़ा होने वाली है इसलिए तुम ग्रीस से भाग जाओ और दूर कहीं गांव में बस जाओ परंतु सुकरात ने मना कर दिया। उसने कहा कि मैं सदा ही अपने सिद्धांतों पर चला हूँ इसलिए सज़ा के कारण भागूँगा नहीं। जब उसे जहर का प्याला दिया गया तब उसने अपने दोस्त से कहा कि तुम मेरी पत्नी को कहना कि हमने अपने पड़ोसियों से जो 3 मुर्गियाँ उधार ली थी, उन्हें वापिस करे। इस प्रकार सुकरात ने भले ही अपने सिद्धान्तों के लिए जीवन का त्याग किया परंतु अंतिम समय उसे ईश्वर की याद की बजाय उधार ली हुई मुर्गियाँ ही याद आई।

ऐसे ही इस्लाम धर्म में भी कानून के विरुद्ध काम करने वालों को पकड़कर सज़ा दी जाती थी। उनके धर्म के अनुसार जो भी कानून बने हैं, उन्हें भी एक प्रकार का संविधान (Constitution) ही कहा जायेगा। जैसे 14वीं सदी में वहाँ के खलीफा ने मुहम्मद पैगम्बर के पीछे घोड़े भेज दिये। भागते-भागते मुहम्मद पैगम्बर को एक गुफा मिली जिसमें वह छिप गया और वहां पर एक चमत्कार हुआ। वह जैसे ही गुफा में छिपा, 10 मिनट के अन्दर वहाँ पर एक बड़ा मकड़ी का जाला बन गया और गुफा का मुँह ढक गया। जब घुड़सवार लोगों ने देखा कि गुफा के मुँह पर एक बड़ा-सा मकड़ी का जाला बना हुआ है अर्थात् उसमें मुहम्मद पैगम्बर नहीं है, ऐसा समझकर वे चले गये। और मुहम्मद पैगम्बर बच गये।

कभी-कभी संसद (Parliament) कानून तो बनाती है परंतु संसद के निर्णयों को राष्ट्रपति स्वीकार नहीं करता है। जैसे 1962 में फ्रांस के राष्ट्रपति Charles De Gaulle ने article 11 में किये गये संशोधन को अस्वीकार कर दिया। इस विषय पर फ्रांस में बहुत चर्चा हुई। बाद में फ्रांस की संसद (Parliament) ने 2 वोट की majority द्वारा 21 जुलाई, 2008 को कानून बनाया कि राष्ट्रपति संसद द्वारा पारित कानून को अस्वीकार नहीं कर सकता। फ्रांस के इस कानून को 23-7-2008 का कानून कहते हैं। इसका प्रभाव दुनिया के बहुत करके सभी देशों में हुआ। दुनिया के जो भी राष्ट्र प्रमुख अपनी मनमानी करना चाहते थे वह एकदम स्थगित हुई है। भारत के संविधान में ऐसा है कि संसद जो भी कानून पास करे, उसे राष्ट्रपति को मंजूर करना पड़ता है। अगर राष्ट्रपति मंजूर न करे तो संसद को कानून वापस लेना पड़ता है।

(शेष.. पृष्ठ 17 पर)

ज़िन्दगी की दौड़-भाग

ब्रह्माकुमारी उषा ठाकुर, मीरा सोसाइटी, पूना

भाग-दौड़ की इस जिन्दगी में चारों तरफ लोग भागते हुए ही नजर आते हैं। सुबह होते ही भक्तजन मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे आदि धार्मिक स्थलों की ओर, विद्यार्थी विद्यालयों की ओर, कर्मचारी-अधिकारी कार्यालयों की ओर, रोगी अस्पतालों की ओर, वादी-प्रतिवादी न्यायालयों की ओर, दुकानदार दुकानों की ओर तथा यात्री गाड़ी पकड़ने की ओर भागते नजर आते हैं। शाम होते ही चिड़ियाएँ अपने-अपने घोंसलों की तरफ भागने लगती हैं। यह भागना तन से ही नहीं, मन से भी है, दिन में ही नहीं, रात को भी है, सिर्फ थल पर ही नहीं, जल और नभ में भी है, केवल जागते नहीं, सपनों में भी है। जीवनपर्यन्त दौड़ का यह सिलसिला जारी रहता है।

साथ जाने वाली कमाई तो की नहीं

आज का मानव दौड़ते-दौड़ते यह भी भूल गया है कि वह किस प्रयोजन से दौड़ रहा है? कब तक वह यूँ ही दौड़ता रहेगा? क्या दिन भर मेहनत कर धन कमाना, खाना और सो जाना, यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है या इससे परे भी कुछ है? वास्तव में देखा जाये तो जीवन में मनुष्य चाहता तो सुख-शान्ति-प्रेम है, इनकी प्राप्ति के लिए वह धनोपार्जन को सर्वश्रेष्ठ आधार मानता है और धन-संचय में अपना अधिकतर समय लगा देता है पर जीवन की शाम आने पर उसे भूल का अहसास होता है कि उसने जीवन भर जो कमाई की वह विनाशी है और साथ जाने वाली नहीं है। जाने वाली कमाई (पुण्य कर्मों की पूँजी) तो उसने जमा की ही नहीं। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि तनाव एवं चिन्ता के कारण उसका स्वास्थ्य इतना खराब हो जाता है कि की गई कमाई का बड़ा हिस्सा स्वास्थ्य को ठीक करने पर ही खर्च हो जाता है, दान-पुण्य या परमार्थ के लिए कुछ बच ही नहीं पाता और वह पश्चाताप करता हुआ खाली हाथ संसार से विदा हो जाता है। कहा जाता है 'चलती का नाम जिन्दगी'। जीवन तभी तक है जब तक साँसें चल रही हैं, संकल्प चल रहे हैं पर कैसे-कैसे और किस दिशा में चल रहे हैं यह समझ अगर आ जाये तो जीवन सफल हो जाये। इस सन्दर्भ में एक पौराणिक प्रसंग आता है –

एक बार एक सभा में राजा जनक का प्रवचन चल रहा था। इतने में किसी की आवाज आती है कि राज्य में कहीं आग लग गई है। बहुत-से लोग सभा से उठकर अपने-अपने घरों की तरफ भागने लगे परन्तु कुछ धार्मिक प्रवृत्ति के लोग और साधु-सन्त अभी भी प्रवचन सुनते रहे। फिर किसी दासी ने आकर कहा, 'महाराज, आग की लपटें राजमहल की ओर बड़ी तेजी से बढ़ती आ रही हैं।' अब तो बाकी जन भी उठ कर भागे कि कहीं उनका कमंडल और लंगोट आग की चपेट में न आ जाए मगर राजा जनक अचल, अडोल और निश्चिन्त अवस्था में बैठे रहे। कुछ देर बाद एक महात्मा ने राजा को इस झूठी खबर के बारे में बताया और आश्चर्य से पूछा, 'राजन, आग का समाचार सुनने पर भी आप कैसे निश्चिंत भाव से अपने स्थान पर एकाग्रचित्त होकर बैठे रहे?' इस पर राजा ने उत्तर दिया, 'महात्मन, भागा तो मैं भी था पर सबकी तरह बाहर की ओर नहीं, अपने अन्दर की ओर। बाहर मेरी कौन-सी वस्तु है जिसकी मैं चिन्ता करूँ? मेरे सारे खजाने तो मेरे भीतर ही हैं जिन्हें आग भी नहीं जला सकती।'

आत्मा शान्त और सुख स्वरूप है

सचमुच, आज का मानव सच्चे सुख की तलाश में भटक रहा है। ईश्वर ने वह बहुमूल्य खजाना हमें दे रखा है। उसकी सही पहचान और प्रयोग से ही हम सच्चे सुख, शान्ति की अनुभूति कर सकते हैं। इसके लिए

आवश्यकता है अन्तर्मुखी होकर अपने उन खजानों, गुणों और सूक्ष्म शक्तियों को पहचानने की। आत्मा तो स्वयं ही शान्त और सुख स्वरूप है। शान्ति के सागर और सुखदाता की सन्तान है। अगर वह इस चिन्तन में रह कर सभी कार्य-व्यवहार करे तो उसका जीवन सुखमय हो जायेगा।

वर्तमान समय सुख-शान्तिमय जीवन जीने की कला सिखाने एवं सुख, शान्ति, समृद्धि सम्पन्न सतयुगी राज्य भाग्य का अधिकार देने के लिए निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा स्वयं इस सृष्टि पर अवतरित होकर अपना दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं। ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करने हेतु आप सभी आत्मायें (भाई-बहनें) स्वयं ईश्वर द्वारा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के किसी भी सेवाकेन्द्र पर सस्नेह आमन्त्रित हैं। याद रहे, 'अभी नहीं तो कभी नहीं।' ❖

भट्ठी के बीच पूंगरों की तरह

ब्रह्माकुमार सतीश, गोहाना (हरियाणा)

अप्रैल, 2012 में मेरे लौकिक ससुर ने शरीर छोड़ा तब उनके छोटे भाई ने ब्रह्माकुमारी बहनों को राजयोग कोर्स के लिए घर पर बुलाया। तीन दिन लगातार कोर्स करने के बाद मुझे लगा, ''जो पाना था सो पा लिया।'' इसके बाद जब पहली बार सेवाकेन्द्र पर बाबा के कमरे में गया तो अन्तर्मन से यही बात निकली, ''बाबा, आपने मेरी उंगली पकड़ी है, अब कभी नहीं छोड़ना।'' उस दिन के बाद मुरली, योग, अमृतवेला कभी नहीं छूटे। दिसम्बर, 2013 में अव्यक्त बापदादा से प्रथम मिलन मनाया।

बात फरवरी, 2016 की है, हरियाणा प्रदेश में जाट आरक्षण आन्दोलन आरम्भ हुआ। दो दिनों तक स्थिति इतनी भयानक थी कि किसी समय भी, किसी के भी घर में बुरी खबर आ सकती थी। जातिवाद की आड़ में शरारती और असामाजिक तत्वों ने दुकानों पर पहले लूटपाट की और बाद में आग के हवाले कर दिया। चारों ओर धुआँ ही धुआँ नजर आ रहा था। शहर के मुख्य चौक पर मेरा कपड़े का तीन मंजिला शोरूम है। इस पर लगा हुआ शिवपिता का झण्डा इसकी पहचान है। घर से दुकान की दूरी कम है परन्तु उस दिन यह दूरी कई मीलों प्रतीत हो रही थी क्योंकि विनाश-लीला के बीच वहाँ तक पहुँचने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी। परन्तु एक बल एक भरोसा लेकर, बाबा के गीत बजाकर शान्ति के लिये योग करते हुए, बाबा का एवररेडी का पाठ स्मरण करते हुए वहाँ पहुँचे तो देखा, दुकान के शटर पर कई चोटों के निशान तो थे पर फिर भी पूरी तरह सुरक्षित थी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि जो शरारती लोग जलाने के लिये आये, उनके हृदय परिवर्तन होते सारी भीड़ ने देखे। जैसे ही वे इस दुकान के सामने आये, यह कह कर कि 'यह हमारी दुकान है', इसे छोड़ अगली दुकानों की तरफ चले गये। **बाबा सच कहते हैं, ''मेरी याद होगी तो भट्ठी की जलती आग में भी बिल्ली के पूंगरों की तरह आप सुरक्षित रहेंगे।''**

हैरानी तब हुई जब खतरा टलने के बाद बेटे से (जो डॉक्टरी की पढ़ाई कर रहा है), युगल से और दसवीं की छात्रा बेटी से फोन पर बात हुई तो पता चला कि ये सभी आत्माएँ अलग-अलग स्थानों पर होते हुए भी इसी लगन में निश्चिन्त थीं, 'बच्चे, तुम चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ।'

अल्पकाल में बाबा ने इतना सौभाग्यशाली बनाया है कि ज्ञान में आने के एक वर्ष पश्चात् लौकिक घर में गीता पाठशाला खुल गई और अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान देने के निमित्त बाबा ने बना दिया। दिल खुशी में एक ही गीत गाता है –

कदम-कदम पर मदद तुम्हारी, ये अहसास दिलाती है।
सोचो, तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।।

क्षमा भाव और साक्षी भाव

ब्रह्माकुमारी सुमन, मड़लौडा, पानीपत

क्षमा-दान सबसे बड़ा दान है, पर इन्सान आसानी से दूसरों को क्षमा नहीं कर पाता इसका कारण यह है कि वह दूसरों के प्रति ईर्ष्या रखता है तथा कड़वाहट भरा जीवन व्यतीत करता है। सोचता है कि मैं क्षमा कैसे करूँ, इसने तो मुझे चोट पहुँचाई है, मैं भी इसे चोट पहुँचा कर ही दम लूँगा। ईंट का जवाब पत्थर से देने की भावना मनुष्य के जीवन को नर्क बना देती है।

अगर हम किसी को क्षमा नहीं कर पा रहे हैं तो अवश्य ही बदले की भावना जागृत होती है। किसी के प्रति हम अपने मन में वर्षों तक नफरत रखते हैं परन्तु उसे क्षमा नहीं कर पाते हैं परन्तु हमें सोचना चाहिए कि इस बात से नुकसान किसका हो रहा है, हमारा या दूसरों का? क्षमा का दान केवल महान व्यक्ति ही दे पाते हैं। क्षमा मानव का आभूषण है, क्षमा करने से इन्सान छोटा नहीं बन जाता बल्कि और गुणवान बन जाता है।

क्षमा वही कर पाते हैं जिनका हृदय सागर की तरह विशाल होता है, जो अपने मन का मैल साफ करते हैं। क्षमा करने तथा क्षमा मांगने वाले अंदर हल्कापन महसूस करते हैं। कई मनुष्य क्षमा मांगने में शर्म महसूस करते हैं, सोचते हैं, हम इनसे कम थोड़े ही हैं, हमारी भी कोई अहमियत है, वे अंदर अहंकार का भाव रखकर स्वयं को खोखला करते जाते हैं। वे बाहर से खुश होने का दिखावा मात्र करते हैं परन्तु वास्तव में वे खुशी का अनुभव नहीं कर पाते। जैसे लकड़ी को अंदर से दीमक खा जाती है, वैसे ही अहंकार इंसान को खा जाता है। कहावत है, झुकता वही है जिसमें जान होती है, अकड़े रहना मुर्दे की पहचान होती है। जो देहभान में अकड़ा रहता है, दूसरे के सामने झुकने में अपमान महसूस करता है वह मुर्दे के समान है। गुणवान व्यक्ति सहज ही झुक कर क्षमा माँग लेता है तथा संबंधों में मधुरता कायम रखता है। सुखी जीवन जीने के लिए दूसरों को क्षमा करना सीखें, इससे हम स्वयं को भी तथा दूसरों को भी दर्द से दूर रख सकेंगे।

साक्षी भाव क्या है? क्यों हम हर वक्त साक्षी स्थिति का अनुभव नहीं कर पाते हैं? हम क्यों टकराते हैं? क्या चाहिए हमें दूसरों से? जब हम स्वमान की स्थिति से नीचे उतरते हैं तो हमारे सामने अनेक दीवारें खड़ी हो जाती हैं। यह ऐसा क्यों है, इसने ऐसा क्यों किया, ये अपने आपको क्या समझता है, हमारी भी तो कोई अहमियत है, हमारा भी तो मान-सम्मान होना चाहिए, हमें कोई क्यों नहीं पूछता है, सब इन्हें ही क्यों पूछते हैं – ये सारे नकारात्मक विचार मन में तब विकराल रूप धारण करते हैं जब हम स्वस्थिति से नीचे आ जाते हैं। साक्षी भाव में हमेशा रहने के लिए कुछ बातों का स्मरण अनिवार्य है –

- स्मृति में रहे कि हर आत्मा इस सृष्टि-मंच पर अपना भाग्य लेकर आई है, कोई किसी का भाग्य छीन नहीं सकता।
- सृष्टि-नाटक में हम सबका पार्ट हर पाँच हजार वर्ष बाद हूबहू रिपीट होता है, कुछ भी नया नहीं है।
- भगवान ने कहा है, 'तुम साधारण नहीं हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो' उस नशे में रहें।
- सृष्टि रूपी नाटक के हर दृश्य का आनन्द लें।
- मालिक बन कर्मेन्द्रियों से कर्म करायें, इससे बुद्धि व्यर्थ से परे रह अलौकिकता का अनुभव करेगी।
- करनकरावनहार की सदा स्मृति रहे।

पूजा के रहस्य

ब्रह्माकुमार सपन, तुमलुक (पं.बंगाल)

भारत में अति प्राचीन काल से ही लोग मूर्ति-पूजा करते आ रहे हैं। न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व भर में कई स्थानों पर लोग देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाकर पूजा करते हैं जैसे ब्रिटेन का 'स्टोनहॅन्ज (विल्टशायर काउंटी में स्थित प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक स्थापत्य)' है वैसे ही रूस और मीडिल इस्ट के कुछ देशों में तथा प्राचीन भारत की सिंधु घाटी सभ्यता में अक्सर एक प्रतिमा समान रूप में पायी जाती है और वह है अनेक पशु-पक्षियों के मध्य बैठे एक मनुष्य की जिसके समीप एक सर्प होता है। इससे पता चलता है कि सम्पूर्ण विश्व में कभी पशुपतिनाथ भगवान शिव की पूजा इसी प्रकार की मूर्ति बनाकर की जाती थी।

अमेरिका महाद्वीप में एक देश है मैक्सिको जहाँ प्राचीन काल में इन्का और माया जैसी सभ्यताएँ थीं। वहाँ कई मूर्तियाँ भारतीय देवी-देवताओं की तरह हैं। वहाँ के लोग हाथी जैसी एक प्रतिमा को गणेश कहते हैं। इतिहासकारों ने उस देश की प्राचीन संस्कृति को सीधे-सीधे प्राचीन भारतीय संस्कृति से जोड़ा है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय संस्कृति को पहाड़ी इलाकों के कुछ मूर्ख गडरियों ने नहीं अपितु आध्यात्मिकता की चरमसीमा पर पहुँचे कुछ बुद्धिजीवियों ने बनाया है तथा उन्होंने इस संस्कृति का लोहा पूरे विश्व में मनवाया है। आइये समझने की कोशिश करें कि हमारे महान पूर्वजों ने मूर्ति-पूजा की प्रथा क्यों शुरू की?

आदि शंकराचार्य ने कहा है - 'द्वैतं नो सहते श्रुतिः' अर्थात् श्रुति (वेद) द्वैत को स्वीकार नहीं करते। वेदों में लिखा है 'न तस्य प्रतिमास्ति' अर्थात् उसकी कोई प्रतिमा नहीं होती। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमारे पूर्वज एक निराकार को ही मानते थे। कलियुग के आने से पहले ही उन्हें यह आभास हो चुका था कि आगे चलकर मनुष्य की स्मरणशक्ति व बुद्धि क्षीण हो जाएगी जिसके कारण आध्यात्मिक रहस्यों को समझने में उसे बहुत परेशानी होगी इसलिए उन्होंने परमशक्ति के कुछ कर्त्तव्यों को, कुछ प्रतिमाओं तथा प्रतीकों के द्वारा समझाने की कोशिश की।

जिस तरह चाँद की ओर इशारा कर रही उंगली को पकड़ने में बुद्धिमानी नहीं अपितु उसके द्वारा इंगित चाँद को निहारने में बुद्धिमानी है उसी प्रकार मात्र परम्परा के तौर पर पूजा करने में नहीं अपितु उसके संकेत को समझकर स्वयं में गुणों को धारण करने में बुद्धिमानी है। हम मूर्ति-पूजा से जुड़े आध्यात्मिक रहस्यों को समझें ताकि पूजा को कोई अंधविश्वास या अंधश्रद्धा न कहें। संस्कृत में पूजन शब्द का एक अर्थ होता है किसी चीज़ का सही उपयोग करना। हम भले ही कर्मकांड करें परन्तु पूजा का लाभ अपने विचार एवं स्वभाव की उन्नति के लिए करें। देवी-देवताओं को कुछ विशेष रंग के वस्त्र एवं फूल क्यों चढ़ाए जाते हैं? वे किसी विशेष वाहन पर ही क्यों बैठते हैं? जो कमल का फूल एक नवजात शिशु का भी भार नहीं सह सकता, उसमें इतने बड़े-बड़े देवी-देवता क्यों और कैसे बैठ जाते हैं? कलश में नारियल, सुपारी, पान के पत्ते, दूब का घास, घी के दीप, धूप-अगरबत्ती ... ये विशेष

सामग्रियाँ ही क्यों देवी-देवताओं को अर्पित होती हैं? जरूर इन सबके पीछे कोई संकेत है जिसके पीछे हमारी उन्नति छिपी हुई है। चलिए देवदर्शन से स्वदर्शन की यात्रा करें –

तुलसी का पत्ता

तुलसी के पत्ते में हजारों रसायन होते हैं। इस औषधीय गुणों वाले पौधे से सर्दी-जुकाम से जुड़ी समस्त बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। वैसे ही परमात्मा भी हमारे सारे कष्टों को हर कर हमें तनाव, अवसाद, निराशा एवं चिंता से मुक्त करते हैं। जैसे तुलसी के पौधे की पवित्रता का मान करते हुए हम उसे घर के बाहर सबसे हटाकर रखते हैं वैसे ही हमें स्वयं को पवित्र बनाना चाहिए ताकि हमें भी ईश्वर का सानिध्य सबसे हटकर प्राप्त हो सके।

केले का पत्ता

दक्षिण भारत में लोग केले के पत्ते पर भोज करते हैं। देवी या देवता के सामने केले के पत्ते पर ही नैवेद्य रखा जाता है। कहा जाता है, स्वाति नक्षत्र में यदि केले के ऊपर वर्षा की बूंदें पड़ें तो वे कपूर बन जाती हैं। इससे हमें श्रेष्ठ संग की सीख मिलती है। परमात्मा के संग से मनुष्य भी देवत्व को प्राप्त कर लेता है। केले का तना और पत्ते जुड़े हुए होते हैं और पत्ते में से पत्ता निकलता है। हमारी भी हर बात में से ज्ञान की बात ही निकलनी चाहिए, व्यर्थ या साधारण नहीं।

दूब का घास

लोग सुबह-सुबह नंगे पाँव दूब के घास पर चलते हैं। यह मुलायम घास पैर पड़ते ही जमीन पर गिर जाती है परन्तु पैर हटते ही अपनी जगह पर वापस आ जाती है। सीख यह है कि गिराने वाली कैसी भी परिस्थिति आ जाए, हमें फिर उठ खड़े हो जाना चाहिए। परिस्थितियों के आने पर भी हमें अपने दिव्य गुणों का त्याग नहीं करना चाहिए। दूब का घास, स्वयं को कष्ट देने वाले की आँखों की रोशनी बढ़ा देता है। हम तो प्राणियों में श्रेष्ठ मनुष्य हैं, हमें भी सभी बातों का सामना करते हुए भटके हुए लोगों को सही राह दिखानी चाहिए।

कमल का फूल

कीचड़ में भी खिलकर देवताओं का आसन बनने वाले इस फूल की महिमा अतुलनीय है। यह पुष्प कभी देवी-देवताओं के हाथों में सुशोभित होता है तो कभी भक्तों के द्वारा उन पर अर्पित होता है। बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य को भेंट स्वरूप कमल ही दिया था। यह अद्‌भुत फूल हमें दुख में भी मुसकराते रहने और माया रूपी कीचड़ में पड़कर भी अपना मुख सदैव ईश्वर रूपी सूर्य की ओर रखने की सीख देता है। यह भारत का राष्ट्रीय फूल है। देवताओं के किसी भी अंग की निर्लिप्तता दिखाने के लिए हम उसकी तुलना कमल से कर देते हैं जैसे नयन कमल, चरण कमल, मुख कमल, कर कमल इत्यादि। भाव यही है कि कर्म करते भी हम अपनी इन्द्रियों को कमल के समान न्यारी बनाकर रखें, उन्हें बुराइयों से प्रभावित न होने दें। यह हमें नर से नारायण तथा नारी से कमला अर्थात् लक्ष्मी बनने का सन्देश देता है।

नारियल

नारियल सामान्य तौर से समुद्र के किनारे उगने वाला एक पेड़ है। जहाँ एक ओर अन्य पेड़-पौधे नमक डालने से खत्म होने लगते हैं वहीं दूसरी ओर नारियल एक ऐसा पेड़ है जिसे उगाने के लिए शुरू से ही उसकी जड़ में खाद के रूप में नमक डालना पड़ता है। इसका फल कलश के ऊपर रखा जाता है। इससे हम सीखते हैं कि हर परिस्थिति को पार करके हमें ऊँचाई को प्राप्त करना है। खाद के रूप में नमक ग्रहण करने वाले नारियल का पानी हमेशा मीठा और सुस्वादु होता है। यह भी हमारे लिए सीख है कि संसार में अनेक कष्ट सहते रहकर भी हमें हमेशा अच्छाई और भलाई करनी चाहिए। नारियल बाहर से कठोर एवं खुरदुरा होता है परन्तु अंदर से बहुत कोमल और चिकना होता है अर्थात् हमारा शरीर कैसा दिखता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, फर्क तो इससे पड़ता है कि जीवन के प्रति हमारा

नजरिया क्या है। जीवन में कौन, कितना ऊपर जाएगा, यह उसके अंदर की चीज पर अर्थात् नजरिए पर निर्भर करती है। नारियल का फूल हमेशा ऊपर की ओर रहता है। यह हमें सीख देता है कि हमारा ध्यान सदा ईश्वर की ओर रहे। इसके तीन छिद्र त्रिकालदर्शी बनने की प्रेरणा देते हैं।

दीपक

दीपक का प्रकाश प्रतीक है ज्ञान का, खुशहाली का और समृद्धि का। बड़े से बड़े तूफान में भी जिस तरह दीपक प्रकाश को फैलाने के लिए अंत तक संघर्ष करता है वैसे ही ज्ञानरूपी प्रकाश को फैलाने के लिए हम भी अंत तक प्रयासरत रहें। दीपक की लौ हमेशा ऊपर की ओर ही उठती है अर्थात् हम आत्माओं को सदैव परमात्मा की ओर ही उठना चाहिए।

कुछ प्रतीकों का उल्लेख करके, उनसे क्या सीख लेनी है, इसका कुछ वर्णन ऊपर किया गया है। भारत के अलग-अलग कोनों में पूजी जाने वाली भिन्न-भिन्न प्रतिमाएँ, उनके वस्त्र-आभरण, वाहन, हस्त-मुद्राएँ भी अनेक प्रकार की हैं। सबका वर्णन इस छोटे-से लेख में सम्भव नहीं। हम आशा करते हैं कि कुछ का वर्णन पढ़कर पाठकगण, भक्तगण अन्य विधि-विधान का अर्थ भी अवश्य समझ जाएँगे। ❖

एक के चौबीस

ब्रह्माकुमारी पल्लवी अग्रवाल, गाजियाबाद

आधुनिक कलियुगी रोजमर्रा की भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में तनाव, अनिद्रा, बढ़ती बीमारियाँ, दिलों में बेचैनी, घबराहट, डिप्रेशन आदि वायुमण्डल के अभिन्न अंग बन चुके हैं जोकि कम या ज्यादा लगभग सभी मनुष्यों पर अपना कुप्रभाव डाल रहे हैं। मेरा जीवन भी कुछ इन्हीं प्रकंपनों के साथ चल रहा था। घर, परिवार सब कुछ अच्छा होने के बावजूद मन कभी शान्त नहीं रहता था।

एक दिन मेरी सोसायटी की एक बहन से बातों-बातों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विषय में पता चला। कुछ दिनों बाद समय निकाल कर मैं सेवाकेन्द्र पर पहुँची। सात दिनों का कोर्स किया। निमित्त ब्रह्माकुमारी बहनों एवं ईश्वरीय परिवार के स्नेहपूर्ण व्यवहार एवं सहयोग ने मन को मोह लिया। मैंने नियमित मुरली क्लास एवं राजयोग का अभ्यास शुरू कर दिया और जीवन में असंख्य परिवर्तन आ गए। खुशी, प्यार, संतोष, प्रसन्नता, वर्तमान में जीना, भूतकाल व नकारात्मक बातों को भूलना, मन का भटकाव खत्म होना, सकारात्मकता के प्रकंपन, सहयोग, शान्ति आदि अनमोल रत्नों का खजाना बाबा ने मेरी झोली में डाल दिया। मन से बाबा को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ।

अति लोकप्रिय टी.वी. चैनल 'पीस ऑफ माइन्ड' में एक बार मैंने बड़ी सुन्दर बात सुनी जो आप लोगों को सुनाना चाहती हूँ। एक बार एक ब्रह्माकुमार भाई ने सेवा करने का मन बनाया। निमित्त ब्रह्माकुमारी बहनों से उसने ईश्वरीय विश्व विद्यालय से सम्बन्धित जानकारियाँ, पते, फोन नं. आदि के कई पर्चे लिये और लोगों को बांटने चल पड़ा। एक स्थान पर खड़े होकर वह जोर-जोर से कहने लगा, 'एक के चौबीस ले लो, एक के चौबीस ले लो।' यह सुनकर कई लोग आए और पूछने लगे, भाई, इस कमरतोड़ महंगाई में ऐसी क्या चीज है जो तुम एक के बदले चौबीस दे रहे हो? तब ब्रह्माकुमार भाई ने कहा, 'दोस्तो यह स्कीम सौ प्रतिशत सत्य है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रतिदिन एक घंटे आओ और चौबीस घंटों का सुख पाओ, तो हुए ना एक के चौबीस।' मैं भी कहती हूँ, हाँ, यह सच है, इस विश्व विद्यालय में आकर यह बात बिल्कुल प्रैक्टिकल हो जाती है। ❖

पवित्रता की भावना

ब्रह्माकुमारी लता, बहेड़ी (बरेली), उ.प्र.

हम कल्प की वही आधारभूत आत्माएँ हैं जो नयी सृष्टि की रचना के निमित्त बनती हैं। स्वयं को पवित्रता का स्तम्भ बनाकर सबको पवित्रता का सकाश देती हैं। पवित्रता का मास्टर सूर्य बनकर देहभान और देह-अभिमान के अंधियारे को नष्ट करती हैं। परमात्मा के प्यार का प्रकाश फैलाती हैं। पवित्रता की भावना से सबका उद्धार होता है, मन को आराम मिलता है, सबको सच्ची शान्ति मिलती है।

पवित्रता की भावना को नष्ट करने वाले कारक

दैहिक आकर्षण- यह तुलना करना कि यह व्यक्ति सुन्दर है, यह भद्दा है, वो लम्बा है, यह पतला है, वो बुरा है, यह अच्छा है, अपवित्रता है। किसी भी वस्तु या व्यक्ति का अच्छा लगना आकर्षण है और अच्छा न लगना नफरत है।

ईर्ष्या- वो आगे बढ़ रहा है, इसको आगे बढ़ाया जा रहा है, इसको सबका सहयोग है, मेरे को कोई नहीं पूछता, इस प्रकार के विचार पवित्रता की भावना को नष्ट करते हैं।

द्वेष- कोई मेरे से आगे न बढ़ जाए, बस मैं ही आगे रहूँ और कोई नहीं, ऊपर से मित्र, अन्दर से दूसरा– ये भाव भी अपवित्रता पैदा करते हैं।

प्रतिशोध की भावना- इसने मेरे साथ ऐसा किया, मैं इसको देख लूँगा। 'देख लूँगा' ही बदले की भावना है।

लगाव- 'मुझे आपके साथ रहना अच्छा लगता है, आपकी बातें अच्छी लगती हैं, बाबा आप से कितना प्यार करते हैं, आपका कितना ख्याल रखते हैं' इस प्रकार दूसरे की महिमा करते उसमें फँसना अपवित्रता है।

हीन-भावना- मुझसे कोई कार्य अच्छे से नहीं होता, मेरे में बहुत कमियाँ हैं, मैं कुछ नहीं कर सकती। इस प्रकार के हीन विचार भी पवित्रता की भावना को नष्ट करते हैं।

'क' के बोल- 'क' माना कडुवा-कसैला। ऐसे बोल पवित्रता को नष्ट करते हैं। कुछ इन्सानों की आदत होती है, जो वे अपनी सत्यवादिता के लिए कहते हैं कि मेरे बोल लगते तो कडुवे हैं लेकिन होते सच्चे हैं। जरूरी नहीं कि सच को कडुवे रूप में ही पेश किया जाए। सच को मिठास के साथ पेश करना ही पवित्रता है।

व्यवहार में रूखापन- कोई असमय घर आता है या अन्य प्रकार से लापरवाह आचरण करता है तो विचार चलता है कि यह कोई आने का समय है, यह कोई ठीक आचरण है? लेकिन हम ऐसे आने वाले का भी ठीक वैसा ही ख्याल करें जितना समय पर आने वाले का करते हैं। व्यवहार को रूखा न बनाएँ, इससे पवित्रता की भावना नष्ट होती है।

जल्दबाजी- किसी भी कार्य की सफलता के लिए धैर्य आवश्यक है। जल्दबाजी चाहे सोच की हो, बोल की हो या कर्म की हो, व्यवहार की मिठास को खत्म करती है।

बीती को चितवो नहीं- जो बात हो गयी, वो हो गयी, उसे बार-बार सोचो नहीं। बार-बार सोचने से भी पवित्रता क्षीण होती है।

पवित्रता को बढ़ाने वाले कारक

भगवान से प्यार और उनमें निश्चय- जिसको भगवान से जितना ज्यादा प्यार होगा वो उतना ही अपने को पवित्र बनायेगा। भक्ति में भी पवित्र चीजों का ही भोग लगाते हैं, अपवित्र का नहीं। साथ-साथ यह निश्चय भी हो कि भगवान ने हमें नयी दुनिया बनाने के लिए चुना है।

स्वच्छता और पारदर्शिता- पारदर्शिता माना अन्दर जो हो वही बाहर दिखाई दे। अन्दर कुछ, बाहर कुछ, ऐसे नहीं। स्वच्छता ईश्वरत्व के समीप ले जाती है।

सम्बन्धों में सत्यता- मिलावट और स्वार्थ सम्बन्धों को खत्म कर देते हैं। इसलिए परमात्मा से रिश्ते निभाने के लिए जीवन में सत्यता चाहिए। जितना भगवान से रिश्ता सच्चा और गहरा होगा, उतनी पवित्रता की पर्सनैलिटी अमिट होगी। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

1.बैंगलुरू- कर्नाटक के गृहमंत्री भ्राता जी.परमेश्वरा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. पदमा बहन। **2.दिल्ली**-केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भ्राता राधा मोहन सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सपना बहन। **3.सोनीपत-** हरियाणा की केबिनट मंत्री बहन कविता जैन को राखी बांधते हुए ब्र.कु. प्रमोद बहन। **4.दिल्ली (पश्चिम विहार)-** दिल्ली के स्वास्थ्य, उद्योग तथा गृहमंत्री भ्राता सत्येन्द्र कुमार जैन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरिता बहन। **5.सेन्धवा-** मध्यप्रदेश के जेल मंत्री भ्राता अंतर सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु. छाया बहन। **6.बिलासपुर (शुभम विहार)-** छत्तीसगढ़ के खाद्यमंत्री भ्राता पुन्नूलाल मोहले को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सविता बहन। **7.फरीदाबाद (एन.आई.टी.)-** हरियाणा के उद्योग तथा पर्यावरण मन्त्री भ्राता विपुल गोयल को राखी बांधते हुए ब्र.कु.उषा बहन। **8.बीकानेर-** केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों के राज्यमंत्री भ्राता अर्जुन राम मेघवाल को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. कमल बहन। **9.जम्मू-** जम्मू-कश्मीर विधानसभा के अध्यक्ष भ्राता कविन्द्र गुप्ता को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सुदर्शन बहन। **10.चन्द्रपुर-** केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री भ्राता हंसराज अहीर को राखी बांधते हुए ब्र.कु. कुन्दा बहन। **11.फाजिल्का-** पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता सुरजीत कुमार ज्याणी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.प्रिया बहन। **12.रानीखेत-** उत्तराखण्ड विधानसभा में विपक्ष के नेता तथा भाजपा के अध्यक्ष भ्राता अजय भट्ट को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा ब्र.कु. नीलम बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : September, 2016.

1

2

3

4

5

6

7

8

1.जगन्नाथपुरी- जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. प्रतिमा बहन। **2.दिल्ली (पाण्डव भवन)-** उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता एल. नागेश्वर राव को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में पिछड़ा वर्ग राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष भ्राता वी. ईश्वरैय्या, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा उच्चतम न्यायालय के रजिस्ट्रार भ्राता रमेश जी। **3.अजमेर-** ब्र.कु.अंकिता बहन तथा ब्र.कु. विजया बहन से राखी बंधवाने के पश्चात् वरदान कार्ड लेते हुए राज्यस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुन्धरा राजे। **4.भुवनेश्वर-** उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता एस.सी.जमीर को राखी बांधते हुए ब्र.कु.लीना बहन। **5.लखनऊ-** उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता राम नाईक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय भाई। साथ में ब्र.कु.पाड्यामणि भाई तथा ब्र.कु. राधा बहन। **6.दिल्ली-** केन्द्रीय स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री भ्राता जगत प्रकाश नड्डा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. आशा बहन। साथ में ब्र.कु. बृजमोहन भाई तथा ब्र.कु.प्रकाश भाई। **7.हैदराबाद (शान्ति सरोवर)-** रियो ओलम्पिक्स में रजत पदक विजेता स्टार बैडमिन्टन खिलाड़ी बहन पी.वी. सिन्धु को राखी बांधते हुए ब्र.कु. कुलदीप बहन। **8.मुम्बई (खार)-** ईश्वरीय ज्ञान-चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में फिल्म अभिनेता भ्राता अमिताभ बच्चन, फिल्म निर्देशक तथा निर्माता भ्राता सुजीत सरकार, ब्र.कु. स्मिता बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन तथा ब्र.कु.पद्मा बहन।